सत्संग में ज़्या शिक्षा मिलती है ?

(सत्संदेश जुलाई क-म्क में प्रकाशित दूसरा सत्संग प्रवचन)

कैदी भी कैदखानों में जाते हैं और जो डाज़्टर है वह भी जाता है सुपरिंटैंडैंट जेल का मुलाहज़ा करता है मगर कैदियों और सुपरिंटैंडैंट जेल और डाज़्टर के कैदखाने में जाने का मतलब कुछ और है कैदी तो अपने किये के सज़ा को भुगतने आते हैं, लेना देना खत्म करने आते हैं। सुपरिन्टेंडैंट जेल से इस लिए जाया करता है कैदखाने में कि भई किसी कैदी ने शोर तो नहीं किया, कोई भाग तो नहीं जायेगा ? वह उन बातों को देखने जाता है, समझे। और जो डाज़्टर जाता है वह यह नहीं देखता कि यह कैदी है। वह देखता है बीमार है, लाचार है। जो ऐसा हो वह उस को चिट लिखता है कि इस को बाहर भेज दो, समझे। तो कैदखाने में ज़ाहिरी शकल में सब ही जाते नज़र आते हैं मगर उन के फंकशनज़ (कामों) में बड़ा भारी फर्क है, समझ में आ रही है मेरी बात ? तो इसी तरह हम सब लोग दुनिया में आते हैं अपने पापों पुण्यों की सज़ा भोगने के लिए, लेना देना खत्म करने के लिए। मनुष्य जीवन भाग्य से मिलता है। इस में यकायक ऐसा समय है जिस में हम आत्मा को प्रारज़्ध को न छेड़ते हुए, अगला जीवन नेक पाक और सदाचारी बनाकर, भजन, सिमरण के साथ लगते हुए रोज़ रोज़ पिंड को छोड़ कर इस महारस को पाते हुए अगर यह समय गुज़ार लें तो हम भी कैद से रिहा हो जायें नहीं तो हमारा हश्र (अंजाम) किया होना चाहिए ?

एक कैदी था। उस की कैद की मियाद खत्म हो गई। हजूर हमारे फरमाया करते थे, वह साथ वाले भाइयों को कहता है, भाई मेरा थड़ा (जगह) पुराना रख छोड़ो, मैं फिर आ रहा हूं समझे। तो अवतार भी आते हैं। वे देखते हैं कि दुनिया में कहीं धर्म की ग्लानी हो रही हो तो अधर्मियों को दंड देने के लिए, धर्मियों को उबारने के लिए और दुनिया की स्थिति को बाकायदा बनाने के लिए। यह अवतारों का काम है, ठीक है; जिन्होंने management करना है। तो संत भी आते हैं कि दुनिया बीमार है; अति दुखी है, लाचार है, उन को रहम आता है तो वह पासपोर्ट देते हैं कि निकल जाओ। तो इस लिए यह कहा है कि :-

संतन को ज़्या रोईये जो अपने ग्रह जायें॥
रोवो साक्त बापुरे जो हाटों हाट बिकायें॥

संत तो अपने घर जाते हैं। अपना काम किया और चले गये। अभी मैंने आप के सामने पेश किया था कि यह महापुरुष ज़्यों आते हैं ? यह कमीशन (प्रभु का प्रमाण पत्र) है हमारी तरह ही मल मूत्र का थैला लेते हैं ज़्योंकि हमजिंसियत कुदरती खासा है, इंसान का उस्ता इसान है, समझे। उस को समझाने बुझाने के लिए, सीधे रास्ते डालने के लिए, practical self analysis का experience (अनुभव) देने के लिए way up करने के लिए वे आते रहते हैं। बाहर भी उपदेश देते रहते हैं और जब वह शिष्य पिंड को छोड़ कर ऊपर जाये, जीते ही जाये या मर कर, दोनों हालतों में वहां भी तुज़्हारे साथ रहता है।

नानक कच्चड़ेयां संग तोड़ ढूंढ सज्जण संत पक्केयां॥
एह जीवंदे विछड़ैं ओह मोयां ना जारही संग छोड़॥

क्राईस्ट ने कहा, I shall never leave thee nor forsake the till the end of the world, अर्थात मैं तुम को नहीं छोड़ूंगा दुनिया के आखिर तक भी। खैर यह बयान करने के तरीका है। हमारे हजूर थे, इस श्रेणी की समर्थता में थी। अब भी उन की मिसाल, संभाल की ईस्ट वेस्ट (पूर्व

पश्चिम) से आती रहती है। यहां नाम देते हुए भी उन की संभाल के तजरबे आते हैं। जब नये आदमी भी उस का अनुभव कर के बयान करते हैं। भई जिस को देखा है उस का ध्यान तो बन सकता है। जिस को देखा ही नहीं, यह एक बड़ी भारी दलील है। कई यह भी कहते हैं कि अपने ज़याल का impression होता है। अरे भाई जिस ने कभी देखा ही नहीं, सुना ही नहीं अगर उस को स्वरूप आ जाये, उस को फोटो बतलाई जाये तो वह मिलाये कि हां यही थे। फिर पूछा जाता है कि ज़्यों भाई यह फोटो ही थी खाली कि सच मुच थे ? वह कहे कि सचमुच थे तो इस से बड़ा भारी सबूत और ज़्या हो सकता है ? वह गॉड पावर जिस इंसानी पोल पर काम करती है कभी मरती नहीं, जिस्म जरूर छोड़ती है। जिस्म के छोड़ने का दुख तो बहुत होता है इस में शक नहीं मगर एक पूर्ण सत्गुरु के चरणों में जो पहुंच गया उस का फिर आना जाना खत्म हो गया।

कहो नानक जिन सत्गुर मिलेया तिन का लेज़ा निबड़ेया॥

निबड़ने के लिए, सत्संगी बनने के लिए हम आये हैं दुनिया में। उन्होंने दया की, हाथ सिर पर रखा, स्कूल में दाखिल कर लिया बनाने के लिए भी और पहुंचाने के लिए भी। तो कल शाम का मज़मून आप के सामने था कि सत्संगी बने हो या नहीं ? बने तो कैसे बन सकते हैं ? अगर उस को अपने सामने रखो सब की कल्याण एक ही जन्म में है, दोबारा आने की जरूरत नहीं है समझे। अगर नहीं करोगे, समर्थ पुरुष का बीजा हुआ कभी नाश नहीं होता।

को ऐसो समरथ जो जारे इस बीज को।

मगर फिर आना पड़ता है। इस में शक नहीं कि इंसान के जामे से नीचे नहीं जायेगा मगर आना पड़ा न। आने में ज़्या सुख है भई ? उलटा लटकना पड़ेगा, बचपन से गुज़रना पड़ेगा। फिर होश आयेगी। अरे भई, अब ही ज़्यों नहीं करते। मेरी बात समझ रहे हो ? मैं बड़ी अपने दिल की तह की असल बात पेश कर रहा हूं ताकि आप लोग भूल में न रहो। अपना जन्म बरबाद नहीं करो। जो कर चुके हो कर चुके हो आज के बाद नहीं करो।

तो आप यह समझ रहे हो मैं ज़्या कह रहा हूं ? उस महापुरुष की प्यारी याद के लिए आज हम सब इकट्ठे हुए हैं। याद में दो फायदे हैं एक तो अपना सबक ताज़ा होता है। जिस पूरने पर उन्होंने चलाया था वे पेश किये जाते हैं वह भूली हुई याद फिर ताज़ा हो जाती है। फिर यह देखना पड़ता है कि हम कहां पहुंचे हैं। सब से बड़ी चीज़ जो हमारे लिए खास हिदायत थी हम उस पर फूल नहीं चढ़ा रहे हैं। वे कहते हैं पापी हो या पुन्नी (पुन्यवान) हो, कोई भी हो, भजन करो। कहीं खड़े हो जाओ, आगे के लिए तुज़्हारा रास्ता ठीक रहे, कहीं खड़े हो जाओ। जितने पाप कर चुके हो वहां खड़े हो कर देखो कि अब आप कहां हो ? और ज़हर खानी छोड़ दो, पिछली ज़हर का इंतज़ाम तो हो सकता है, कई तरीकों से अरे भाई और खानी बंद करो। तब होगा न। तो पहला है, खड़े हो जाओ, अपने आप पर नज़र मारो, सत्संगी बने हो ? सत्संगी बनने के लिए सदाचारी जीवन था जो कल पेश किया गया और आज है सत का संगी कैसे बनना है ? इस की वे पूंजी देते हैं। जब वे नाम देते हैं सब भाइयों को जिन को उपदेश मिल चुका है सब को कुछ न कुछ experience (अनुभव) मिल चुका है। अगर किसी ने इस को गंवा लिया है तो उस की अपनी गलती नादानी ना समझी और नालायकी कहो तो उस वक्त वही उपदेश जो सब महापुरुष जब आते हैं देते हैं और हजूर ने बज़्शा है, उस के लिए आप को बिठाया जायेगा। ऐसा करो, समझो बात को, किसी आसन पर बैठ जाओ। यह योग

कैसा है, कैसा नहीं है। यह पीछे talk में ज़िक्र कर दिया जायेगा। बच्चा बूढ़ा, जवान किसी मुल्क किसी ज़ात पात का हो, कोई लेबल लगाये बैठा हो कोई फर्क़ नहीं है ज़्योंकि यह साईंस ऐसी है जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने की है। जब आप इन्द्रियों का घाट छोड़ गये आप की कौन सी समाज रह जाती है ? खैर यह इस वक्त मज़मून नहीं है। इस वक्त यह है कि वह पूंजी जो उन्होंने हमें दी थी उस को फिर ताज़ा करना है। इस के लिए गौर से समझिए जिन का भजन बनता है, ठीक। उन को चाहिए और ज्यादा वक्त दें जैसा कि कल शाम को मैंने अर्ज़ किया था। जिन का नहीं बनता वे गौर से समझें। अगर भजन बनना बंद हो जाये तो फौरन मिलो, नहीं मिलते तो अपना नुकसान करते हो। यहां पर पढ़े लिखे अनपढ़ या अमीर गरीब या हाकिम महकूम का सवाल नहीं है, जो करे सो पाये।

यह करनी का भेद है नाहिं बुद्धि विचार।
कथनी छांड करनी करो तो कुछ पाओ सार॥

तो माथा टेकने से काम नहीं बनेगा यह असलियत है। जो काम कर के तुम सत्संगी बन सको, आज का मज़मून आप के सामने वही रखे जा सकते हैं। एक यह कि महापुरुष जब दुनिया में आते हैं उन का अपना मिशन है और हमारा अपना भोग मिशन है। जो कर्म हम ने किये हैं उस की सज़ा हम भुगतेंगे, आज पहले समझाया गया।

तो महापुरुष आया करते हैं हमारी तरह ही मगर वे कुछ और होते हैं, बात तो यह है। उन की तालीम ज़्या होती है ? और फिर उन की ज़ात के मुतल्लक कि हमजिंसियत, यह कुदरती कायदे के मुताबिक यह देह धारण की समझे उन से हम ज़्या सबक ले सकते हैं। बात तो यह है। पहली बात, उन की जो ज़िंदगी थी उस से हम ज़्या सबक ले सकते हैं ? यह शाम का मज़मून रखेंगे ज़्योंकि थोड़ी थोड़ी चीज़ एक जगह हो जाये तो वह ज्यादा वाजेह हो सकता है। वक्त ज़्योंकि थोड़ा होता है। तो इस वक्त यही पेश करना है कि महापुरुष जब भी दुनिया में आये उन सब की teaching (शिक्षाएं) किया हैं। किया एक महात्मा ने कुछ और कहा, दूसरे ने और कहा तीसरे ने और कहा। यह बात तो अलाहदा रही कि जो पांचवें तक गया उस ने पांचवें का जिक्र किया है उस ने भी कहा कि इल्म ला इंतहा है। एक कालेज में दाखिल हुआ वह भी कहता है इल्म लाइंतहा है। एक पी0एच0डी0 बड़ी डिग्रियां ले कर भी कहता है इल्म ला इंतहा है लफ़्ज़ वही बरता गया ला इंतहा मगर हर एक ने अपने लेवल से बयान किया है, समझे मेरी बात ? लफ़्ज़ तो वही होगा अपनी अपनी सेंटेन्सेज़ के मुताबिक जो कुछ भी उन्होंने पाया उस के मुताबिक वह बयान कर गये। हमारे दिल में सब के लिए इज़्ज़त है।

अनुभवी पुरुषों की तालीम कहां से शुरू होती है ? पहली बात, पिंड से नहीं, इन्द्रियों के घाट से नहीं समझे, इस से ऊपर। वे अपराविद्या की तालीम नहीं देते। वे पराविद्या की तालीम देते हैं। Where the word's philosophies end there the religion starts. जहां दुनिया के फलसफे खत्म हो जाते हं वहां उन की शुरू होती है इन्द्रियों के घाट से ऊपर। बाकी जितने सिलसिले हैं उन का अपना अपना ताल्लुक है। जो जो जिस जिस लाईन तक गये वहां वहां तक बयान कर गये। तो हमारे दिल में सब के लिए इज़्ज़त है। Highest (ऊंचे से ऊंचा) आदर्श किया पेश किया। हम ने उस को देखना है और सब महापुरुषों ने ज़्या बयान किया ? तो पहली बात यह है कि सब यह कहते हैं कि एक शक्ति है सारे universe (सृष्टि)को बनाने वाली। यह वे इकरार करते हैं

समझे। जो नास्तिक है वे भी इकरार करते हैं, माफ करना कैसे ?

कहते हैं एक बच्चा था और एक था नास्तिक। जब वह (नास्तिक) मरने लगा उस का अंत समय आ गया, नास्तिकों में माफ करना, जो भी लोग शुरू शुरू में नास्तिक थे उन में कुछ फर्क देखा है। वे ज़िंदगी के सदाचार पर बड़ा ज़ोर देते थे मुझे याद है जब मैं छोटा था, मैं देव समाज में जाया करता था। वे बड़े प्यार से मिलते थे यहां तक कि मुझे inner circle में दाखिल कर दिया था। बगैर initation के (बगैर समाज में दाखिल होने के) मेरे ज़यालात देख कर। उन में (देव समाज) में ज़्या रखा है कि अगर तुम एक ज़याल, आंख से बुरी नज़र से देखते हो तुज़्हारी आंख पिंड छोड़ कर नहीं बनेगी। जिस हाथ से तुम चोरी करते हो, बुरा काम करते हो आप के बाजू पिंड छोड़ कर परलोक में नहीं बनेंगे। ऐसे ऐसे ज़याल थे। बड़ी chaste life बड़ा पवित्र जीवन का आदर्श था। ज़्योंकि inner circle में मुझे freedom (आज़ादी) थी गो (चाहे) मैं उन के समाज का मैंबर नहीं था। तो सदाचार के लिहाज़ से इस में शुरू शुरू में बड़ा भारी ज़ोर था। आज ज़्या हालत है ? वह तो deterioration (गिरावट) होती है। तो नास्तिक भी जीवन की पवित्रता के मुतल्लिक, सदाचार के मुतल्लिक बड़ा भारी ज़ोर देते रहे। आज कल तो खाओ पीओ, और मज़े करो।

तो नास्तिक की बात हो रही थी। वह जब मरने लगा, जिस का जीवन नेक पाक साफ हो तो झलक आ ही जाती है। उस का अंत समय आ गया उस मकान में लिखा था God is nowhere यानि खुदा, परमात्मा कहीं नहीं है यह लिखा था। तो एक बच्चा आया. छोटा था. पढ़ने लगा जी ओ डी God, आई एस is ऐन ओ डज़्ल्यू now ऐच ई आर ई here, God is now here कि खुदा अब यहां है। वह (नास्तिक) कहता है हां बच्चा खुदा यहां है। जिस का जीवन पवित्र हो वह भी अंत समय महसूस करता है कि कोई और चीज़ कंट्रोल कर रही है जिस को हम ने ज़िंदगी में अनुभव करना था वह अंत समय कर रहे हैं।

अब विश्व धर्म सज़्मेलन में जो फरवरी में हुआ था पीछे कलकज़ा में सब मज़हबों के हैड (आचार्य) थे माह बोधी सोसायटी के हैड भी थे मिलाया से आगे पीछे कुछ आदमी आये हुए थे तो रेज़ूलेशन जिस दिन पास होना था उस दिन में नहीं जा सका बीमार था जिस्मानी तौर पर उस दिन यह बहस रही कि रेजुलूशन में खुदा का नाम नहीं आना चाहिए ज़्योंकि हम नहीं मानते अब अगर एक सोसायटी भी न माने परमात्मा को तो विश्व धर्म सज़्मेलन में सब का वह रेजूलूशन तो नहीं हो सकता शाम को सुशील मुणि जी आये कहने लगे कि भाई आज तो सारा दिन झगड़े में ही गुजर गया वह कहते हैं हम खुदा को नहीं मानते रेजूलूशन के पास हो ? सब का तो नहीं हो सकता ना आप कल जरूर आयें खैद मैं दूसरे दिन गया बीमार ही था एक डाज़्टर मेरे साथ था ज्यादा बीच में कशमकश थी मैं ने कहा talk to me वह मेरे साथ कहीं यह बेहोश न हो जाये मैं ने talk जो दी जो वह डाज़्टर कहने लगा यह बीमार शिमार कुछ नहीं मैं ने वहां talk दी इसी के मुताल्लिक देख तो उन के हैड को बुलाया ज़्यों भई तुम महात्मा बुद्ध के कलाम को मानते हो ? कहने लगा हां मैं ने कहा महात्मा बुद्ध ने यह कहा है Self shall find refuge over slef in self वह दूसरा ह्यद्दृयद्ध जो है वह श्क्द्द ह्यद्यद्दृद्ध (प्रभु) के सिवा और हो सकता है ? हामरी ह्यद्दृयद्ध किसी और है और उस ह्यद्दृयद्ध की बगैर हमारा ठिकाना ही ज़्या है ? और कहा it is very difficult to find जो बड़ी मुश्किल से मिल सकता है एक ह्यद्दृयद्ध किसी और उस ह्यद्यद्दृद्ध में जो जाती है तो वह ही ह्यद्दृयद्ध हुई न। वह इन्द्रियें से जाना जाता है न मन से न बुद्धि से, न प्राणों से आत्मा

जब तक उस से liberate आज़ाद न हो जब तक अन्न मे कोश प्राण मय कोष मने मये कोश विज्ञान मै कोश आनंद मये कोश अन से ऊपर न आये उस को कोई झलक नहीं मिलती उस को पाना मुश्किल है। वाकई कोई overself है ना उस overslef को हम कहते हैं परमात्मा वह मान कये फिर रेज़ूलुशन पास हुआ। परमात्मा का नाम आया रेजूलूशन में so-called (नाम निहाद) नहीं मानते उन को parallel (मुखतलिफ धर्मों के तकाबली मुताला) का पता नहीं। उन्हें पता नहीं कि बात ज़्या है बात दर असल यह है ज़्यों कि उन्होंने self-analysis (आत्म अनुभव) नहीं मिया महापुरुष आये वह चले गये पीछे जब तक कोई अनुभवी पुरुष रहा तालीम को ताज़ा रखता रहा जब लकीर की फकीर बनी समाजें बनीं तो organisations means stagnitation and deteriortoin. उस को श्च्द्वष्म्र-ह्वश्च करने के लिए सो झूठ सो यह वह बनाने पड़ते हैं तो कहते हैं ज्य सांप निकले तो लकीर पीटा करो। तो पहली खोज महापुरुषों की है कि एक ऐसी हस्ती है जो आप का cause of creation (सृष्टि के बनाने वाली है) causesless cause (सब से कदीम) है मैं अमरीका गया वहां साईंस दान मिले मुझ को साईंद दान नहीं मानते न मैंने उन को कहा भई आप ने अनर्जी तो पैदा की यह ऐटम बज़्ब वगैरा अनर्जी जी है ना सब कुछ ऐसी ष्भ्ठ्ठtrolled चीज़ भी तुम ने पैदा कर दी कि कुज़ा ख्र्घंटे चक्कर लगा कर फिर नीचे वापस आ सकता है वक्त पर दुनिया के गिर्द गिर्द चक्कर लगा कर पावर है न मगर power controlled by consciousness नहीं। एक साहब थे। मैंने उन को कहा कि आप ने यह सब तो पैदा कर लिया ज़्या कभी आप consciousness (चेतनता) का एक औंस भी बना सके हो? कहते नहीं। फोर्स (ताकत) तो बनाई, है एनर्जी भी बनाई मगर चेतनता पैदा कर सके हो? कहते हैं नहीं। फिर मैंने कहा कि आप साईंस से (मैटर) मादा का बहुत सारा सिलसिला सीख गये हो तो analyse किया (खोजा) तो ज़्या मिला? कहते हैं ऐटम। उस को analyse किया तो ज़्या मिला? कहते हैं उस में movement (हरकत) हो रही है। उस में ज़्या है? वह बाकायदगी से हो रही है अफरा तफरी से हो रही है, haphazard हो रही है? कहने लगे it is very much controlled and very much rythmic. कि वह बड़ी बाकायदगी में और कंट्रोलड हालत में हो रही है मैंने कहा वह कौन चीज़ जो उस ऐटम को भी कंट्रोल कर रही है as a matter of inference. तो मैंने उन को कहा Science is a research in the domain of mater, religion is the research in the domain of consciousness. बस आप की साईंस ने मैटर की खोज की। इस को traverre(खोज) सीखा और दिनों दिन नई से नई चीज़ मालूम हो रही है बल्कि यह है कि mater is all energy (मादा एनर्जी है) और एनर्जी के आगे भी कोई और है जिस को अनुभव नहीं किया जा सकता, that cannot be experienced. अब मज़हब ज़्या है? इस चेतनता के आगे जो मौजूद है आप सब के अंतर उस के इज़हार करने का नाम है मज़्हब। हम ज़्या समझते हैं? एक लेबल लगा लिया या दूसरा लगा लिया, खास किस्म के राहो रस्म धारण कर लिए। इसी का नाम मज़हब है। अरे भई यह बात नहीं। ठीक है यह स्कूल कालेज हैं जो लेबल हम ने लगाये हैं। रहो किसी समाज में। उस की तालीम इन्द्रियों के घाट से शुरू होती है समझे मेरी बात? तो पहली बात सब महापुरुष ने यह कही है कि हस्ती है जो सब के बनाने वाली है और सब की जीवन अधार है। नाम कुछ रख लो। किसी ने उस को राम कहा किसी ने अल्लाह कहा, किसी ने खुदा कहा। अनेकों नाम नाम रखे उस के समझाने के लिए, किस पावर के ? जो इज़्हार में नहीं आई थी God a absolute थी उस का

कोई बयान नहीं। वह तो लय होने का मुकाम है। तो दो किस्म के बयानात मिलते हैं महापुरुष के कलामों में। एक तो यह कहते हैं nobody has seen God so far in life. कभी तो यह कि परमात्मा को किसी ने नहीं देखा यह उस absolute stage का बयान है जो लय होने का मुकाम है। जब वह परमात्मा इज़्हार में आया है, God into expression, एको अहम बहु श्याम (मैं एक हूं अनेक हो जाऊं) तो वह इज़्हार में आई प्रभु की जो ताकत थी न, जो खंडों में ब्रह्मंडों को धार रही है उस के नाम रखे गये समझाने बुझाने के लिए :-

मलहार जाऊं जिते तेरे नावों हैं

जिस के नाम हैं उस को हम देख भी सकते हैं उस को मिल भी सकते हैं दूधो रुतों में याद रखो जब इज़हार में कोई चीज़ आती है उस में vibration (हिलोरा) होती है जिस का नतीजा है ज्योति का विकास और ध्वनि का प्रज़्ट होना light and sound principle परमात्मा ज्योति स्वरूप है और परमात्मा प्रणव की ध्वनि है ना वजूद हो रहा है अवगति हो रहा है वह God into expression power है जो खंडों ब्रह्मंडों को लिए खड़ी है उस का नाम है उस का नाम परमात्मा है उस के अनेकों नाम रखे गये समझाने बुझाने के लिए तो मैं अर्ज़् कर रहा था कि महापुरुषें ने बयान किया है दो तरह से कि परमात्मा को किसी ने देखा न सुना और कुछ कहते हैं हम ने देखा भी है नानक का पादशाह से जाहिर है और क्राईस्ट ने कहा Behold the lord यही स्वामी विवेकानंद ने कहा वह नास्तिक थे पहले चैलेंज करते थे कि कोई है ऐसा पुरुष जिसने प्रभु को देखा है ? तो राम कृष्ण परमहंस उन दिनों अनुभवी पुरुष थे उन के पास गये सवाल किया Master have you seen God! कि ऐ महात्मा ने प्रभु को देखा है ? तो वह कहते हैं हां बच्चा मैं उस को देख रहा हूं जैसे वह देखता है वह दिखाई भी सकता है और कौन देखते हैं ? जो गुरमुख नहीं ?

सो गुरमुख देखे नैनी

गुरमुख कहते हैं जो ऐसे अनुभवी पुरुष के संमुख बैठा हो जो सुरत को मन इन्द्रियों से आज़ाद कर के तन मन के पिंजरे से ऊपर जा सकता हो और तुम को wayp-up कर सकता हो उस का नाम गुरु है आगे कहां तक वह पहुंचा है वह अलग बात रही तो जो गुरु बने वह किन आंखों से देखता है कहते हैं

नानक से अखिड़या बे अन्न जिन डिंडो मा पुरी

ऐ नानक वह आंखें और हैं जिन से वह नज़र आता है समझे। है तो सही ना ऐसी भगवान कृष्ण जी ने फरमाया तुम मुझ को अन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षू से जो मैंने तुम को बज़्शी है दो चक्षू जिस को रूatent eye, third eye, single eye कहते हैं तो अंर की आंख से देखा जा सकता है वह आंख चड़े की नहीं कोई और है तो किन आंखों से देखे हैं यह सवाल भी हो गया तो महापुरुष जब आते हैं वह देखते हैं दिखाई भी सकते हैं So knows the fatehr and others whom the son reveals तबरेज़ साहब ने कहा :

बबायद बश्चम सर माशूक दीदन

कलामश राबेगोश खुद शुनीदन

चाहिए अपनी आंखों से प्रभु को देखना अपने कानों से उस के कलाम को सुनना चाहिए इस का मतलब यह है कि देख सकते हो न तो यह मैं ज़्यें पेश कर रहा हूं ? तो पहली बात finding महापुरुषों की यह है कि हम ने प्रभु को देखा है वह देखा भी जा सकता है किसी के

पास बैठ कर ? जिन्होंने देखा है बड़ी मोटी बात यह पहली खोज है मैंने नास्तिकों का जिक्र भी यिका बोधों का जिक्र भी किया पारसी भी सभी मानते हैं कि परमातज़ है यह पहली खोज है इस के बाद गौर से सुनिए।

तो पहली बात तो मैं ने पेश की कि खोज सब महापुरुष की किया रही है कि एक ज़ात हक है बस वह कैसा है ? वह कहते हैं वह ला तगैय्युर ला तबदील है unchangable permanence वह आद सच्च जग सच्च है। है भी सच्च नानक हो सी भी सच्च जो आदी से सच था युग नहीं बने थे तो भी वह अटल और विनाषी था अब भी है और हमेशा ही ऐसा ही रहेगा। वह ज़्या है ? वह कार लेस कार है। वह स्वयंभू प्रकाश है और इस के अंदर कोई तबदील नहीं कर सकता वह अपने आप में कायम बाज़ात है यह दूसरी बात जो मैं पैश कर रहा हूं सृष्टि का कोई बनाने वाला है ना तो आप मैं से कई भाई कहते हैं कि यह सृष्टि बेल के सर पर खड़ी है कोई कहते हैं शेष नाग के सर पर खड़ी है अरे भई शेष नाह भी कहीं बैठा हो का ना बेल भी कहीं खड़ा होगा या नहीं इस को किस ने बनाया है अगर बैल के नीचे जिस पर यह है, इस का भी कोई बनाने वाला है वह भी किसी के सर पर आ रहा होगा न।

धरती होर परे होर होर

तिस ते भार तुले कौन जोया

वह cause less cause ãñU unchangable permancnece है लातगैय्युर, लातबदील जो है, उस के साथ जो लग गये वह भी लातगैय्युर, लातबदील हो गये, सत का स्वरूप हो गये वह सत है यह दूसरी बात है जो महापुरुषों ने कही finding है उन की तीसरी बात वह कहते हैं कि इस को हम किसी योनी में पा सकते हैं ? योनी तो बड़ी हैं त्ब लाख जैसा योनी हैं यह आम अंदाज़ा है जो रखा गया है तो त्ब लाख जैसा योन में केवल मनुष्य जीवन ही ऐसा जीवन है जिस में तुम इस को पा सकते हो बस यह सब का मुतफज़्का फैसला है किसी समाज में रहो तो इस लिए महापुरुष ने कहा है कि इंसान अशरफुल मखलूकात है highest rung in creaton (सब से ऊंची सीढ़ी है) सृष्टि की, यह मनुष्य जीवन कुरान शरीफ में जिक्र आता है कि जब इंसान का पुतला बनाया गया समझे, तो फरिश्तों को हुकम दिया कि उस को सजदा करो तो यह फरिश्तों की भी सजदागाह है, समझे।

सरब जोन तेरी पिनहारी

सरब में तेरी सिक वारी

सारी जूनें तेरी सेवा के लिए बनाई गई हैं और सब में तो सरदार जूर है समझे यह महापुरुषों ने कहा और इसी लिए कहा यह जिस्म जो है यह निरंकार नई देह है समझे Body is the temple of God यह श्रीहरि मंदिर है।

मस्जिद इस्त ईं दिल सब महापुरुष यही कहते हैं यह जिस्म सच्ची मस्जिद है सच्चा हरिमंदिर है जिस में तुम बस रहे हो। तुज़्हारा जीवन अवहार भी बस रहा है इस को अनुभव करने के लिए मनुष्य जीवन हमें मिला हे और मनुष्य जीवन में ही हम उसे पा सकते हैं और किसी में नहीं यह तीसरी finding है महापुरुषों की :

जिस देही को समरीं देव

सवो देही भज हर की सेव

आप बड़े खुशकिस्मत इंसान हैं मनुष्य जीवन आप को मिला तुम सृष्टि की ऊपर की सीढ़ी पर आ गये । अब इन्द्रियों का घाट छोड़ो और खुदा की बादशाहत में दाखिल हो जाओ अगर आप दाखिल हों तो उस को कहते हैं to be born renew नया जन्म लेना पुरातन जमानों में दो जन्मा बनाने की रस्म थी कि नहीं ? इस का यही मतलब था इस वक्त ऐसे ब्रह्मण थे जो ब्रह्मण के चार वर्ष के बच्चे को और जो देश, व्योपारी लोग थे उन के छः साल के बच्चे को और क्षत्रीय के आठ साल के बच्चे को दो जन्मा बनाया जाता था वह (ब्रह्मण) बिठाते थे way up करते थे और गायत्री मंत्र देते थे गायत्री मंत्र में ज़्या है ? तत्व सो तीर वेर नियम कि अंतर ज्योति का विकास हो यह उन में समर्थता थी अब सिलसिला चल पड़ा समझे एम ए का स्टूडेंट बी.ए. , बी.ए का दसवीं का पांचवीं और पांचवीं का अब पहली जमात में आ गया है।

गया है सांप निकल कर तो लकीर पीटर कर

रस्म वही है मगर वह competency वह समर्थता नहीं रही। समझे तो दो जन्मा बनना है excwept ye be born anew ye cannot enter the Kingdom of god. तुम प्रभु की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते। जब तक तुम अपना नया जन्म लो तो यह तालीम जब क्राइस्ट (यसू मसीह) ने दी तो एक बड़ा पढ़ा लिखा था आलिम फाजिल लोग इस की बड़ी कद्र करते थे जब यह मसला पेश यिका तो वह पढ़ा लिखा आलिम है कहने लगा Lord how can we re-enter the womb of the mohter and be re born? कि हम कैसे माता के गर्भ में दाखिल हो कर पैदा हो सकते हैं ? तो क्राइस्ट ने कहा भई देख तुम इतने आलिम फाज़िल हो लोग तुज़्हारी पूजा करते हैं तुम को यह पता नहीं कि Flesh is born of flesh and spirit of the spirit तुम को पता नहीं कि जिस्म जिस्म पे पैदा होता है और आत्मा आत्मा से पैदा होती है यह आत्मा की साईंस है जिस्म की साईंस नहीं कि गर्भ में जाओ तो महापुरुष आप को मनुष्य जीवन में जब चाहें way-up करते हैं (जिस्म से ऊपर लाते हैं) नया जन्म देते हैं पहले ही दिन The very first day greatness बड़ाई है और यह काम तुम केवल मनुष्य जीवन में ही कर सकते हो और किसी में नहीं यह तीसरी finding (दरयाज़्त) है।

चौथी खोज ज़्या है ? मनुष्य जीवन में कैसे पा सकते हैं ? तो इस का तजरबा तुज़्ळारे अंतर में ही हो सकता है देखिये इंसान का जिस्म बड़ा एक wonderful house है जिस में हम रह रहे हैं अजीब व गरीब मकान है समझे इस को ब्रह्मंड के नमूने पर बनाया गया है ब्रह्मंड में तीन मंडल हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण हम को भी प्रभु ने तीन शरीर दिये हैं हम आत्मा हैं देह धारी तीन देह तीन जिस्म हमें बज़्शे हैं स्थूल जिस में हम काम कर रहे हैं स्थूल दुनिया में मौत के वक्त यह स्थूल जिस्म उतर जाता है उस के उतरने के बाद सूक्षम देह और फिर कारण देह है कारण देह कारण लोक में फिर तीनों के पार हो जाये फिर होश आती है कि मैं कौन हूं तुम अनुभव करते हो कि तुम आत्मा हो जब आत्मा का अनुभव करते हो कि तुम किसी ताकत के आधार पर इस जिस्म के साथ कायम हो पहले दिखये यह स्थूल देह मिली है इस में सुराख हैं आंखों के, कानों के, नासका के मूंह के गुद्दा के इन्द्रि के तुम भाग नहीं सकते सारा पेट चाक कर देता है दिमाग का अप्रेशन करता है फिर भी तुम मरते नहीं भई कोई चीज़ है न तुम को इस को कंट्रोल कर रही है बात तो यह है सांस बाहर जाता है वापस न आये रह जाये रह नहीं सकता कोई controlling चीज़ है तो इस का अनुभव करना है कहां पर ? जब आप इस तरफ से स्थूल सूक्ष्म कारण से आज़ाद हो गये तब मालूम होगा कि किसी और आम हर प्रेम इस जिस्म के साथ कायम हैं तो इस लिए सब महापुरुषों ने कहा है कि न हव इन्द्रियों से

जाना जाता है न मन से न बुद्धि से न प्राणों से समझे बुद्धि निर्णय कर सकती है।inferences (नतायज) निकाल सकती है किसी नतीजे पर पहुंच सकते हो मगर यह being ÙãUè´ becoming नहीं seeing नहीं समझे मेरी बात? जब तक अपने आप की होश न आये अपने जीवन अवहार को कैसे जान सकते हो? बड़ी बड़ी बात है तो इस लिए सब महापुरुषों ने कहा भई तुम अपने आप को जानो बस who you are and what you are और नाथी स्टेशन कदीम यूनानियों ने कहा यानी अपने आप को जानो गुरु नानक साहब फरमाते हैं

कहो नानक बन आपा चेनहिये

मिटे न भ्रम की काई

कि जब तक हम अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद कर के अपने आप को अनुभव नहीं करते यह भ्रम जो बन रहा है यह मिट नहीं सकता भ्रम ही है न भ्रम किस को कहते हैं, जो असल में चीज़ कुछ और हो, हमें नज़र कुछ और आये हम आत्मा देहधारी हैं देह का रूप बन रहे हैं इस को (जिस्म को) analyse (अलाहदा) नहीं कर सकते यहीं से हमारी भूल शुरु होती है। यहीं से माया का मोल शुरु होता है आत्मा देहधारी देह का रूप बन गये देह के लेवल से दुनिया को देख रहे हैं यही पर मादे की बनी हुई है और matter is changing (मादह बदल रहा है) जगत भी अस्त है यह सारा जगत मैटर (मादा) का बना हुआ है ज़्यांकि हम जिस्म जो अस्त है इस पर रूप बन रहे हैं जगत भी बदल रहा है तो जब दो चीज़ें एक ही रज़्तार से बदल रही है जो किसी का रूप बना बैठा है वह कहता है खड़े हं न मादर बदल रहा है न सात साल में यहां तक बयान किया है कि हड्डियां है न हड्डियों के ज़र्रे जो हैं यह भी renew (नये) का बना हुआ है दोनों एक ही रज़्तार से चल रहे हैं इस लिए मत भास रहा है इतनी जगत की सत्यता की चिनाहट हमरो दिल व दिमाग़ पर लगी पड़ी है पढ़ते हैं महात्मा कहते हैं आंखों से देखते हैं ऐसे जिस्म हमने अपने कंधों पर उठाये हैं और शमशान भूमि में पहुंचाये हैं मगर यकीन नहीं आता है कि हम ने भी जाना है हम जिस्म नहीं हैं भई जिसे हानो चिकनाहट वाला कपड़ा इस पर पानी डालो तो एक कतरा नहीं ठहरता कि अंधेरगर्दी है कि नहीं कि आंखों से देखते हैं हाथों से दिमाग देते हैं ऐसे ही जिस्मों को मगर हमें यकीन नहीं आता तो यह अजीब व गरीब मकान है जिस में हम रह रहे हैं इस में वह (प्रभु) मिलेगा याद रखो यह पहाड़ों की चोटियों पर नहीं जंगलों बयाबानों में नहीं, दरियाओं के नटों पर नहीं ग्रंथों पोथियों में नहीं पहाड़ों पर एकांत है इस से फायदा उठाओ उस का कल में ने जिक्र किया था।

solitude (एकांत) temporary (कुछ वक्त की) आप को साल में महीने दो महीने भी मिले बड़ी खुशी की बात है जाओ जो दिमाग पर गलाज़त चढ़ी हुई है थोड़ा होश में आजायें घरों को रेत सारा जंगल बायाबान समझ लो घर ही जंगल समझो रात के वक्त एकांत के लिए ठीक है पहाड़ों पर जाओ कभी कभी जाओ जो सारे ही पहाड़ों पर मिल जायें तुम को रोटी कौन देगा? बड़ी मोटी बात है तुज़्हारी फर्ज़ हैं यह लेना देना प्रारबुद्ध कर्मों के अनुसार भुगतना पड़ता है अपना बोझ दूसरों पर उतार कर फैंकते हो यह कहां का इंसाफ है तुम कायर लहे की दुनिया माफ करना महापुरुष कहते हैं:

जिस्म मिला लेना देना खुशी से निभाओ और याद रख तेरना हमेशा पानी में आयेगा केवल थ्योरी से नहीं समझने से नहीं आयेगा सब चीज़ें अपनी मर्जी के मुताबिक हों तो महात्मा बने रहना कोई बड़ी

बात नहीं भई। जब मर्जी के खलाफ हो फिर दिल टिकाओ में रहे उस का नाम है महात्मा तो दुनिया में रहो महापुरुष जब आते हैं कहते हैं भई दुनिया में रहो घर बार छोड़ने की जरूरत नहीं जिन का लेना देना है बच्चों को पापों उन के अंतर भी वही आत्मा है जो तुज़्हारे अंतर है वह प्रभु की अंश है प्यार से पालो अमानत समझो तुम खजांची हो खज़ांची। खजांची को अगर एक लाख रुपए जमा हो जाये अगर दस हजार का चेक आ जाये तो खजांची को किया है ज़्या दर्द पड़ना चाहिए माफ करना यह अमानत है लेना देना खुशी से निभाओ मनुष्य जीवन भागों से मिला है थोड़ा इन्द्रियों का घाट छोड़ दो ऊपर आ जाओ यह काम तुम मनुष्य जीवन ही में कर सकते हो ग्रंथों, पोथियों का पढ़ना मना नहीं है दरिया के तटों पर बैठना मना नहीं है पहाड़ों में एकांत थोड़ा हासिल करना साधन को पूर्ण करने के लिए कोई मना नहीं है मगर एक बात है जहां भी जाओ चलो अंतर मिलेगा तो अंतर में ना जिस को मिला है अंतर में मिला है:-

सब कुछ घर में बाहर नाहीं

बाहर टोलें सो भ्रम भलाहीं

और

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं नेकी बुद्ध आये हाथ

कहीं कबीर तप पाईये जो भेदी लिजे साथ

इस राज़ का जो वाकिफ है इस से देखिये न वह (प्रभु) हमारी आत्मा की आत्मा है हमारा जीवन आधार है तो आत्मा ने उस का अनुभव करना है ज़्वाह जंगल में जाओ ग्रंथों पोथियों में यही नतीजा निकलता है इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि वह हमारी आत्मा की आत्मा है जब तक आत्मा मन इन्द्रियों से आज़ाद न हो हम को अपने आप की होश न आये। जीवन आधार को कैसे जाना जा सकता है न मन से न धन से न प्राणों से, आत्मा ने अनुभव करना है तो यह अनुभव कहां मिलता है ? यह सिर्फ अपने अंतर ही में मिलता है जब अंतर की आंख सूक्ष्म हो जाती है तो बाहर भी वही नज़र आता है तो महापुरुषों ने इस बात को जताने के लिए digest (खुलासा-निचोड़) पेश किया। ग्रंथों पोथियों को पढ़ो यह हपला कदम है यह अपराविद्या है भई पढ़ने के लिए जैसे मैंने अभी अर्ज़ यिका था मैं अपना सारा जीवन आप को बताऊ छोटी उम्र से मेरा पानी से बड़ा प्यार था पानी के किनारे बैठना पानी के किनारे बैठा रहना एकांत के लिए बड़ा अच्छा है मगर घर बार छोड़ने के लिए नहीं काम करो फिर जाओ बैठो थोड़ी देर के लिए कोई हर्ज नहीं कभी कभी शमशान भूमि में जा बैठा करो तुम को पता लगे ज़िंदगी का नक्षा ज़्या है ? कुछ अंश उतरे दिल व दिमाग से तो उन से फायदा उठाना है एकांत होना शमशान भूमि में जा बैठना। एक ने आना दूसरे ने आना कोई रोते आ रहे हैं कोई चल्लाते आ रहे हैं कोई जवान है कोई बूढ़ा है अरे भई इस का मुर्दा शरीर अभी यह नज़्शा है कौन सी चीज़ है जो इस से निकल गई है और हम में है ? महात्मा बुद्ध को होश कैसे आई है ? इसी तरह वह मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि मनुष्य जीवन यह गति पाता है बेशक पढ़ो सारे ग्रंथों पोथियों को पढ़ना पहला कदम है यह अपराविद्या है।

दो किस्म की दोयाओं हैं एक अपरा विद्या है और एक परा विद्या अपराविद्या का ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है ग्रंथ पोथियों का पढ़ना जो है इस से होश आती है। महापुरुषों ने ज़्या कहा यह findings (दरयाफतें) में पेश कर रहा हूं। महात्माओं की यही चीज़ें मिलेंगे कि एक हस्ती है इस का नाम कुछ रख लो जो सब के बनाने वाली है इस का बनाने

वाला कोई नहीं है वह unchangabel permanence (अटल लाफानी है) और मनुष्य जीवन ही में इस को पा सकते हैं यही बातें मिलती हैं। कहां पर? अंतर में पढ़ने से इस बात की होश आती है तो यह समझ आने पर भी इस बात का कहां अनुभव करना है? अपने अंतर में तो वह विद्यायें हैं अपरा विद्या और परा विद्या एक Ordinary (आम) एक जिस्म से ऊपर की एक पर यह मार्ग एक शरीर मार्ग यह मार्ग इन्द्रियों के घाट का मार्ग बड़ा प्यारा मार्ग मालूम होता है। शरया मार्ग इन्द्रियों के घाट ऊपर जाने का मार्ग है जो अंधेरे से शुरु होता है इस का realissation (अनुभव) कहां से शुरु होता है ? ग्रंथों पोथियों के पढ़ने से होश आयेगी किन के पास बैठ कर? जिन्होंने इस तरफ कदम उठाया है इन से right import (सही मतलब) मिलेगा आलिम इस की कई तफसीरें करेंगे। Right imposrt का कोई पता नहीं ज़्योंकि देखा नहीं है न देखा ज़्यान कुछ और है पढ़ा लिखा सुना सुनाया बयान कुछ और होता है कबीर साहब थे वह सरमाजीत पंडित से मिले सरमाजीत पंडित जो सब को जीतने वाला पंडित था वह बहस मुबाहेशा करने को आ गया कहने लगे देख पंडित

मेरा तेरा मनवा कैसे इक होई रे

मैं कहा हूं आंखन देखी तू कहता कागत की लेखी मैं देख कर बयान करता हूं तो कागज़ों का पढ़ा पढाया या बयान करता है तेरा और मेरा मन कैसे मुतफिक़ हो सकता है?

सुन संतन की साची साखी

सो बोलें जो पीखें आखी

संतों की शहादत को सनद, वह सच्ची है वह वह कुछ बयान करते हैं जो आंखों से देखते हैं तो यह चीज़ कहां मिलती है? तुज़्हारे अंतर ही में है और अपने अंतर में भी कहां मिलती है? जब तुम इस लेवल पर, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ वह अदृष्ट से हटते नहीं फैलाव हटते नहीं और इन्द्रियों का घाट छोड़ते नहीं वह है तुज़्हारा जीवन आधार मगर तुम इस का अनुभव नहीं कर सकते तो इस जिसम के अंतर भी कहां मिलता है? जब तीसरी आंख जो दो भरो मद है वह खुले तब मरते आदमी आप ने देखे हैं? नीचे चक्कर टूटते हैं लेंथे बजता है आंखों ऊपर की तरफ फिर जाती हैं यह आंखों ठिकाना है रूह का इन्द्रियों का घाट यहां तक रह जाता है यह आंख कान शरीर सब नीच रह गया ना जब रूह मर कर जाये अगर जीते जी यहां आ जाओ इस में enter हो जाओ kindgdom of God cannot be had by observatkon जब तक फैलाव में हो तुम अंतर की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते तो इन्द्रियों का घाट छोड़ने का उन से ऊपर आने का भेद, कोई अनुभवी पुरुष मिल जाये तो मिले वस्तु कहीं ढूंढ़ने कहीं कहीं बुद्ध आवे हाथ कहीं कबीर तब याये जो भेदी लिजे साथ अगर किसी राज़ के वाकिफ को साथ ले लोगे तो वह ज़्या करेगा?

भेदी लिया था कर देनी वस्तु लिखाये

कोट जन्म का पंद्रह थापल में पहुंच जाये

अगर इस को साथ लोगे, वह कहता है तुज़्हारे अंतर में है इस में समर्थता है वह way-up करता है इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है आंख खुल जाती है तुम इकरार करते हो कि है जो भी यह दे सकता है इस का नाम साद हो या संत है कहां पर देता है यहां (ऊपर) लाकर यह उस की competency (समर्थता) है सत्संग अंतर प्रभु ढेठा

और

सत्गुर मिले तां अखीं देखे

और

घर में घरो खलाये सो सत्यगुर पुरख सजान

बड़ी साफ बात है जाओ ढूंढो मनुष्य जीवन में ही मिलेगा मगर कहां पर मिलेगा ? पहली चीज़ है कि बाहर जितना फैलाव है जिस्म में चेतनता फैली हुई है बाहर फैलाव में जा रही है इन्द्रियों के घाट से इस को अंतरमुख करो पहले बाहर से हटाओ अंतर मुख फिर इन्द्रियों के घाट का ज़्याल छोड़ो फैलाव पर लावो यहां पर आ कर इस का realisation इस का अनुभव होता है बात समझे आप ?

हम समाजों में दाखिल हुए थे यहां (अंतरमुख आत्मा के मरक़ज़ पर आ कर) इस का अनुभव करने के लिए ज़्यों साहब हर एक समाज एक स्कूल है ना जिस में हम दाखिल हुए हैं प्रभु को पाने के लिए यही गर्ज़ है ना सब की मगर हम ने ज़्या किया ?

चाले थे हर मिलन को बेच ही अटकियो चेत

चलते तो थे घर से निकले थे प्रभु को पाने के लिए रास्ते ही में एक गये कहां अटके ? घर से निकल थे स्टेशन पर पहुंचना था वहां गाड़ी पर सवार हो कर मंज़िल मक़सूद पर जाना था घर से निले ही नहीं पहली बात यह घर है ना हमारा वह ट्रेन यहां से (वद भरो म मध्य) मार्ग शुरु होता है यह वह जगह है यहां मर कर जीव जाता है जिते जी तुम को यहां आना है जब स्टेशन पर ही नहीं पहुंचेगा गाड़ी पर सवार कौन होगा ? यह मिसाल समझाने के लिए है कई बाहर से हटे भी घर से निकले भी रास्ते ही में शज़्द बाज़ी में लग गये। कोई मदारी बना बैठा है कोई यह कर रहा है कोई वह कर रहा है वह इसी में फंस रहे हैं अब यकसूई में आने से रुधियां सिद्धयां आ जाया करती हैं कोई इसी में लग जाते हैं वह भी रह जाते हैं पलेट फार्म पर आ आ जाये अपने आप आ सकते तो अच्छी बात है मर कर तो आता ही है सारा जहान खड़क खड़क कर आता है अगर अब तुम यहां आ सकते हो अपने आप तो खुशी की बात है अगर किसी ष्ह्वद्बश्चद्दह्लद्दठ्ठह्ल हस्ती के पास बैठोगे वह थोड़ी सी तवज्जा देगा बस बैठो बीस बैठो पचास बैठो पांच सौ बैठो हजार बैठो तवज्जा देगा तुम महसूस करोगे कि ऊपर के आगेय आरज़ी तौर पर आंख खोलने की आने से पहले यह चीज़ नहीं मिलती है तो इस लिए जब तक कोई गुरु न मिले जो इस राज़ का वाकिफ है इस

भेदी के साथि, करो वस्तु लिखाये

कोफ जन्म का पिंधा था पल में पहुंचा जाये

करोड़ों जन्मों से हम प्रभु से बिछड़े पड़े हैं ज़्यों ? इन्द्रियों के घाट पर बैठे रहे पित्रमान मार्ग पर हरे नेक कर्म के नेक फल बद कर्म बार बार आना जाना रहा दूसरा है देवयान पंथ शरे मार्ग वह अंधेरे से शुरु होता है आंखें बंद करो अंधेरा है ना जब खुल जाता है तो खुलता ही चला जाता है अंड ब्रह्मंड पर ब्रह्मंड आगे कोई ला इंतिहा है तो इस राज़ का जब वाकिफ कार मिलेगा तो इस का पता मिलेगा। ञ्जद्धद्दह्लद्द द्वह्य ठ्ठश ह्यद्दद्यद्ध ख्द्धह्लद्धशह्लह्ल ठ्ठड्डद्व कोई युक्ति नहीं जब तक परिपूर्ण परमात्मा से तुम न जुडु और वह परिपूर्ण परमात्मा का ष्ठ्ठह्लड्डष्ह्ल (इस से जुड़ना) बगैर समर्थ पुरुष के नहीं मिलता कोई कर सकता है तो बड़ी खुशी से राके न कर सको तो दुनिया के कामों में हम किसी की मदद लेते हैं कि नहीं ? शर्म की कौन सी बात है हमारे मनुष्य जीवन धारण करने की सब से बड़ी गर्ज़ प्रभु को पाना है समाजों में दाखिल होने का और इस के लेबल लगाने और राह और रस्मों से प्यार करने का मतलब प्रभु को पाना है और कुछ है ?

फिर और द्धद्वठ्ठस्त्रद्वठ्ठद्दह्य ज़्या हैं आप को देह मिली है मनुष्य जीवन की उस में तुज़्हें यह एक द्धह्लद्गद्गस्त्रशद्व (आज़ादी) है कि तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाय सकते हो अगर एक कदम ऊपर ले लिया दो जन्मे बन गये द्वठ्ठह्लश ह्लद्धद्ग ड्डद्गब्थ्ठ्ठद्द तुम चद्वठ्ठद्दस्त्रशठ्ठ शद्ध त्रशस्र में द्गठ्ठह्लद्गह्म (दाखिल) हो गये आना जाना खतम हो गया इसी लिए कहा कि जिस के अंतर परमात्मा की ज्योति का विकास हो जाये ऐसी रूह फिर वापस नहीं आती है। जितने हमारे रस्म व रिवाज हैं अंत समय आता है कहते हैं जल्दी करो देवा मंसाओ अरे भई जीते जी देव अना जाना है नहीं तो बे गता मर जायेगा लकीर की फकीरी तो रह गई मगर असलियत भूल गये आगे चीज़ बनाने की रस्म थी वह मैंने अभी अर्ज़ यिका है वह ब्रह्मण थे जो दो जन्मा बना सकते थे आज भी कोई हो हम पाऊं धोने को तैयार हूं जिस के अंतर ज्योति का विकास हो जायेगा वह नहीं ओयगा वापिस आत समझ आ गई ? हमारे रस्म व रिवाज ज़्या हैं ? आज हरिद्वार जाते हैं वहां पर शाम के वक्त में अग भी गया था वहां वह ह्लड्डय्द्मह्य मैंने दीं वहां कहने लगे भई यह बातें तो हमें कोई बतलाया ही नहीं समझे रस्मों रिवाजों में लगे पड़े हैं लकीर की फकीर कर दी इस बात की होश नहीं कि ज़्या करें वहां ज़्या करते हैं ? शाम को दिनों में ज्योति जगा कर बहाते हैं दरया पर जो जगत रहे ठीक जो बुझ जाये फिर बहाते हैं बार बार बहाते हैं जो जगत रहे बड़ी खुशी है मतलब यह है कि संसार सागर से तरने के लिए ज्योति का विकास चाहिए समझे अब अगर आप के अंतर ज्योति प्रज़्ट हो जाये इस महा रस को पा जाओ तो दुनिया के रस ज़्यों भायेंगे समझ आई मेरी बात ? तो इस लिए गुरु नानक साहब जब वहां गये उन्होंने कहा अरे भई ऐसा तुज़्हारे अंतर एक दीवा जल रहा है लाइट जल रही है ज्योति का विकास है:

ऐसा दीवा बाले को

नानक तिस परम गत हो

तुज़्हारी प्रमगति हो जायेगी सत्यगुर ज़्या करता है ?

सतुर मिले अंधेरा जाये

जीं देखियां तीं रहियां समाये

अब आप बात समझे सत्गुरु किस को कहते हैं और हम ज़्या समझ रहे हैं तो इस लिए आगे द्धद्वठ्ठस्त्रद्वठ्ठद्दह्य ज़्या हैं कि कोई इस राज़ का वाकि.फ मिले इस को कोई मुश्किल नहीं थोड़ी सी तवज्जा देदे बस उस की तवज्जा में यह उभार है माफ करना कई ऋषियों, मुणियों के हड्डियों के ढेर हो गये मगर हकीकत को नहीं पाया जड़ से चेतन को अलग करना कोई बच्चों का काम नहीं। किसी महापुरुष की कृपा है और प्रभु कृपा से ऐसे पुरुष का मिलना तीन चीज़ें बन गईं प्रभु कृपा चाहिए सब से पहले प्रभु कृपा करे आप के अंतर तड़प हो मनुष्य जीवन भागों से मिला हे जब तड़प दिल में पैदा होगी आवाज़ उठेगी कि हे परमात्मा तू कहां है ? समझे यह दिल की आवा.ज उठेगी वह प्रभु देखता है कि यह बच्चे मुझे पाने को तड़प रहा है इस के दिल में रहम आता है वह ज़्या करता है ? किसी मिले हुए को मिला देता है वह ज़ड़ा है

कोई जन हरसेयों देवे जोड़

तो पहले प्रभु कृपा पहले हमारे दिल में तड़प हो नसीब फराज़ दुनिया के ऊंच नीच के सबब से या पिछले संस्कारों के सबब से आग जले, आज़्सीजन मदद को आतीहे डीमांड और सप्लाई का नियम

अटल है। ह्ळद्धद्गहद्ग द्धह्य ड्डहद्गड्डह्स्र द्धश्ह ह्ळद्धद्ग द्धह्लठ्ठद्गह्ब ड्डठ्ठस्र ख्ड्ड– ह्ळद्गह द्धश ह्ळद्धद्ग ह्ळद्धद्बहह्यह्ल्ब समझे तो प्रभु कृपा चाहिए प्रभु कृपा हो तो प्रभु जिस पोल पर इंसानी जिस्म पर काम कर रहा है इस से पोल मिला दे वह तुम को अंतर मिला देगा तो दो कृपा तो हो चुकीं भी आप पर प्रभु कृपा आप को मनुष्य जीवन मिल गया बड़े ज़ागों वाले हो आप के दिल में थोड़ा बहुत शौक़ बना। प्रभु ने कृपा की जो उस से मिला है उस को मिला दिया मिले हुए की निशानी ज़्या है ? वह मिला हुआ है तुम को जोड़ देता है पूंजी दे देता है किसी बात की ? उस के अनुभव करने की जो चेतन से अलग करने की थोड़ी पूंजी मिल गई बढ़ाओ दिनों दिन को फिर तुम भी उसी गति को पा सकते हो जिस को उन्होंने पाया है श्वक्द्गह्ब ह्यड्डठ्ठह्ल द्धड्डह्य द्धद्बह्य श्वड्डह्यह्ल ड्डठ्ठस्र द्गक्द्गह्ब ह्यद्बठ्ठठ्ठद्गह्ल ड्ड द्धह्लह्लह्लद्ग तो पहले प्रभु कृपा हो फिर हो गुरु कृपा हो वह दया करे थोड़ी पूंजी दे दे तीसरी एक और कृपा चाहिए भई वह आत्म कृपा है

अपने जीव की कुछ दबा पा लो

चोर इसी का गेड़ बचा लो

समझे अपने पर कुछ दया करो भई हमारे हजूर फरमाया करते थे कि जो लोग भजन सिमरण करते हं अपने आप पर दया करते हैं जो लोग भजन सिमरण नहीं करते वह अपनी गर्दन अपी छुरी से काट रहे हैं। तो इन्द्रियों के भोागें में लज़्पट हैं सदाचारी जीवन नहीं बनाते याद रखो जिस की आत्मा इन्द्रियों के भागों रसों में लज़्पट है यह इल्म है इन्द्रियों के ऊपर जाने का तो मनुष्य का जीवन जिन का हनीं है वह इन्द्रियों के घाट छोड़ कैसे सकते हैं ? सूर दास जी फरमाते हैं :

पग आगे आगे जात हैं मन पीछे पीछे जात

आदत नेचर बन जाती है बात समझ आई ? तो ऊपर जाने के लिए जीवन की पवित्रता निहायत जरूरी है इस के लिए आप को थोड़ा संयम बनाना पड़ता है यह संयम बनाना यह आत्म कृपा है पूंजी का मिल जाना उस की कमाई करना या आत्म कृपा है कल मैंने अर्ज़ किया था कि सत्संगी कैसे बन सकता है ? सत के संग के लिए आये हैं न हम यहां ? इसी लिए किसी महापुरुष के चरणों में जाते हैं इसी का जिक्र कल आया था उस के लिए यही है कि जब तक आत्म कृपा न हो जो प्रभु कृपा है और गुरु कृपा है वह पूरी फलती नहीं माफ करना।

पावन दास एक महात्मा हुए हैं उन्होंने यही लफ़्ज़ बरते हैं कि तीन किस्म की कृपा चाहिए पहले प्रभु कृपा वह हो गई मनुष्य जीवन आप को मिल चुका है अनुभवी पुरुष भी आप को मिल चुका है उस ने नाम किया पूंजी भी दे दी उस की कृपा होगी अब तुज़्हारी आत्म कृपा चाहिए आत्म कृपा न होने से दोनों कृपा होते हैं हुए पूर्ण फलपती नहीं हां इस में शक नहीं कि किसी समर्थ पुरुष का बीज डाला हुआ फना नाश नहीं हो सकता

को ऐसो समर्थ जो जारे इस बीज को

मनुष्य जीवन में आना पड़ेगा मनुष्य जीवन से नीचे नहीं जा सकोगे ज़्योंकि यह निज मनुष्य जीवन में ही फल सकता है इस लिए निचलभी खूनी तो खत्म हो जाये गी मगर आना पड़ेगा कि नहीं ? तो तीन कृपायें वह गुरु किया करते हैं ?

गुरु दिखलाई मोरी जित मर्ग परट है चोरी

वह कहते हैं भई तुम लूटे जा रहे हो कौन सी लूट ? दुनिया सारी ही लूटी जा रही है माफ करना कोई किसी का माल व असबाब चुरा

रहा है कोई किसी का रुपया हर रहा है कोई किसी को मार कर तुज़्हारे जिस्म को तोड़ रहा है दर पर्दा या जाहर दारी से अरे भई सब से भारी दुश्मन कौन है ? जो तुज़्हारी सुरत पर हमला कर रहा है समझे कोई तुज़्हारा सामान ले गया तुम बच गये किसी ने तुज़्हारी टांग बाज़ू तोड़ दिये तुम बच गये मरे नहीं कोई आये तुज़्हारी सुरत पर हमला करे वह खतरनाक है कि नहीं ? कौन ? जो हम को प्यारी चीज़ें लग रही हैं कहां से ? यह इन्द्रियों के घाट से हमला कर रही हैं कहां से ? यह इन्द्रियों के घाट से तुज़्हारी सुरत पर हमला कर के अपनी तरफ खींचावट में डाल रही है तुज़्हें वक्त नहीं मिलता कि तुज़्हें अपने आप की इन्द्रियों के इन्द्रियों के भोगों रसों मेकं है बाहरी है यह कह दो कि दिल हम को प्रभु की अमानत था मिला था इस दुनिया में बूतों की याद फिर पूजा कर रहे हैं कि हे प्रभु हमारे बच्चे राज़ी रहें पूजा कर रहे हैं प्रभु की बच्चे दिल दिमाग में बैठे हैं बीमारी में मंदिरों में जाप भी रखवाते हैं भोग भी डलवाते हैं कई अरे भई यह दुनिया तो यहीं रह जायेगी सब की रही और तुज़्हारी रह जायेगी आखिर छोड़नी है किसी ने छोड़ना है ? कहां जाना है ? उस का भी कभी फिक्र किया है ? जिस की सुरत में दुनिया बस रही है।

जिस की सर में दुनिा बस रही है, कहां जायेगा ? जहां आसा तहां बासा जिस का गला काटोगे वह तुज़्हारा काटेगा। समझे ! जिस का हक मारोगे वह तुज़्हारा हक मारेगा जिस का दिल दुखाओगे वह तुज़्हारा दिल दुखायेगा। जैसा दूसरों से करोगे वही भरोगे Karmic Law इतना ज़बरदस्त है कि उसे तुम evade नहीं कर सकते, तुम उस से बच नहीं सकते। बात समझ रहे हो ? तो अनुभवी पुरुष हमें यह बतलाता है कि कहां से तुम लूटे जा रहे हो ? इंद्रियों के घाट से ! इन्सान का जिस्म बड़ा wonderful house है जिसमें हम रह रहे हैं। इस में इन्द्रियां लगी हैं जो बाहर खुलती है, अन्तर नहीं खुलतीं। बाहर के संस्कार तो हम लेते रहते हैं। इन्द्रियों के घाट से हमारी सुरत पर कज़्जा पा रही हैं बाहर की चीजें वही दिल दिमाग से बस रही है। तो महापुरुष कहते हैं, कैसे इन्द्रियों को तुम दमन कर सकते हो ? इसलिये कहा कि इन्द्रियां दमन हों। वे कहते हैं, इन्द्रियों के घाट से तुम लूटे जा रहे हो भई, तुज़्हारी सुरत पर हमला हो रहा है। तुम दुनिया के रूप बने बैठे हो, सपने आते हैं तो दुनिया के आंखों से त्त फसदी के करीब संस्कार बाहर दुनिया के हमारे दिल दिमाग़ में बसतेहैं कानों से क्ब फीसदी और बाकी और इन्द्रियों के घाट से तो नतीजा ज़्या है ? सपने भी उसी के आते हैं। बरड़ाते हैं तो भी दुनिया ही निकलती है। कहां जायेंगे ? जहां आसा तहां बासा। यह self evident truth (प्रज़्ट सत्य) है जो मैं पेश कर रहा हूं। यहां समाजों के सवाल नहीं। हर एक समाज में यही तालीम है। ज़बांदानी अपनी रही, तरज़े बयान अपना रहा। बात वही कह रहे हैं नज़्से मज़मून वही है। तो इस लिये,

मूंद लिये दरवाजे

तां बाजे अनहद बाजे

वह कहते हैं, कैसे कंट्रोल कर सकते हो ? न रूह के मरकज़ (केन्द्र) पर मर कर तो आना ही है न, अब, जीते जी आप देखिये how to rise above body consciousness (पिंड से ऊपर कैसे आना हो सकता है)। तो सारे महापुरुष कहते हैं learn to die so that you may begin to live. तो यह है साईंस। सारी उम्र किताबें, ग्रंथ पोथियां पढ़ते रहे, आलि फाज़िल बन जाओ, ग्रंथकार बन जाओ, सब कुछ बन जाओ, ज़्या प्रभु मिल जायेगा ? पढ़ने से शौक बढ़ेगा। ज़्या ? महात्माओं ने कहा, findings का मैं जिक्र कर रहा था कि वह प्रभु सब का जीवनाधार है। मनुष्य जीवन ही में हम उस को पा सकते हैं, अंतर्मुख हो कर, इन्द्रियों के घाट से ऊपर जा कर:-

एवड ऊचा होवे को,

तिस ऊचे को जाणो सो॥

सारी उम्र ही बेशक पाथियों के आलिम फाजिल (विद्वान) बन जाओ, लैक्करार बन जाओ, ग्रंथकार बन जाओ बेशक। जंगलों में जाकर हड्डियों के ढेर हो जाओ, जब तक इन्द्रियों का घाट छोड़ते नहीं घर में रहो ज़्वाहे बाहर रहो, बाहर जंगलों में भी जा कर माफ करना भई तुज़्हें ज़्या करना है ? आखिर एकांत के अन्तर जाना है भई तुज़्हें। हां इस में शक नहीं solitude is a helping factor (एकांत सहायक है)। अगर चौबीस घ्ंटों में, महापुरुष कहते हैं, दो तीन घंटे भी तुम इस तरफ दे दो, अगर घड़ी को चाबी दे दो, वह भी चौबीस घंटे चलती रहती हैं। बाकी उस की अमानत समझ कर खज़ांची बन कर रहो। दुनिया में रहते हुए तुम दुनिया के बन्दे नहीं रहोगे। इसलिए कहते हैं कि ऐसा महापुरुष मिल जायें:-

पूरा सतगुर भेटिये पूरी होवे जगत।

हंसदेयां खेलदेयां खवंदया

पहनंदिया बिच्चे होवे मुक्त॥

घर बाहर छोड़ने की ज़रूरत नहीं, समाजों के बदलने की ज़रूरत नहीं अपने अपने बोले रखो छोड़ो इन्द्रियों के घाट और चलो ऊपर। अगर इन्द्रियों के घाट पर रहोगे नेक कर्म करो या बुरे करो, दोनों की सज़ा-जज़ा भुगतनी पड़ेगी।

स्वर्ग नर्क फिर फिर औतार॥

बार बार आना पड़ेगा। यह है पितरियान पंथ जो गीता में बयान किया गया है। देवियान पंथ ही से मुक्ति है, श्रेय मार्ग कहो, देवियान पंथ हो। मगर इस से निकलने पर कहां जाओगे ? बाहर attachement (लगन) रहेगी बार बार आ रहे हैं। हमारा बार बार दुनिया में आने का कारण ही यही है कि हम जहां आसा तहां बासा अगर इन्द्रियों का घाट छोड़ कर अन्तर्मुख उस महान लज़्त को पा जायें, यह दिल से दुनिया उतर जाये, फिर:-

जब ओह आवा एह रस नहीं भावा॥

फिर मर कर कहां जाओगे ? जहां की आसा है तो इस के लिये ज़रूरी ज़्या बात है कि किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत हो। चीज़ आप में है। जब आप उस के अन्तर चलो उस (गुरु) की आज्ञा के मुताबिक, वह आप को पूंजी देगा। वह यह नहीं कहता कि अपने आप चलो। वह थोड़ी पूंजी दे देते हैं। आप साथ हो बैठते हैं कहते हैं, चलो। वह God Power (प्रभु शक्ति) तुज़्हारे अन्तर है। वह (पावर) सब की गुरु है। तो जब अन्तर में जाते हो वहां भी सामने आ खड़ा होता है:-

बातो बाशद दर मकानो लामकां।

चुं बिमानी अज़ सराओ अज दुकां॥

आखिर ज़्या होता है ? वह God Power तुज़्हारे आथ रहती है। वह सब गिलाफों को उतारने में मददगार होती है, आप भी सतनाम, सतपुरुष में लय होती है और तुम को भी लय कर देती है। आगे सतनाम या सतपुरुष आप को अलख, अगम अनामी absolute God में लय कर देता है।

यह है थ्यूरी, इस में एक रुकावट है बड़ी भारी। वह ज़्या है कि यह मन रास्ते में रुकावट है। आत्मा सत वस्तु है, चेतन हस्ती है, अजर है, अमर है मगर मन के साथ लग कर यह जीव बन जाता है। जीव मारता भी है और जन्म भीलेता है। और सब का जीवनाधार, परमात्मा, हमारे अन्तर होते हुए भी हम जन्म ले रहे हैं माफ करना, ज़्योंकि आत्मा मन के अधीन हो कर यह जीव जैसवा कर्म करेगा वैसा भेगेगा। तो महापुरुष ज़्या कहते हैं कि विवेक से काम लो भाई। विवेक किस को कहते हैं ? सत और असत के निर्णय करने को, discrimination को।

अब सत किस को कहते हैं और असत किस को कहते हैं ? यह बात समझने वाली है। सत वह वस्तु है जो लातगय्यर और लातबदल है, unchable permanence (अटल, अविनाशी)। वह कौन है ? अपनी तरफ नज़र मार कर देखो:-

साधे एह तन मिथ्या जानो।

या भीतर जो राम बसत है

साचा ताहि पहिचानी॥

यह तन मिथ्या है, matter का बना है, chanding है, मैंने अभी अर्ज़ किया था। इसमें सत वस्तु तुम हो, तुम आत्मा हो न आत्मा परमात्मा की अंश है।

कहो कबीर एह राम की अंश।

मन इन्द्रियों के घाट पर घिरी पड़ी है। जीव बना बैठा है, जन्म मरण में बह रहा है। तो बाहरी इन्द्रियों के घाट से बाहरी अलायशें हैं, उन को बन्द करो। मन की आदत जो बन गई है बार-बार दुनिया की तरफ दौड़ने की, दस दिन बीस दिन, महीना दो महीना एक काम करो, फिर बेअज़्तियार मन उधर जाता है, habit (आदत) बन जाती है, habit nature में शामिल होती है। उस को खड़ा करो। बुद्धि से काम ले रहे हैं, समझने के लिये । Reasoning is the help and reasoning the bar, समझने के लिये तो यह ठीक है, समझ आ गई किस बात की ? कि तुज़्हारे अन्तर है, अष्ट और अगोचर है। अब चलो ऊपर। आप जा सकते हो बड़ी अच्छी बात है तो आप चले जाओ, नहीं तो किसी की मदद ले लोद्ध नाम कुछ रख लो। तो पूंजी जब महापुरुष दे दे, फिर उस को दिनों दिन बढ़ाओ। बस। तो हमारे और उस के दरज़्यान रुकावट किस बात की है ? मन की।

मन जीते जग जीत।

गुरु अर्जुन साहब ने फरमाया है, मजहबों की हैसियत समाजों की हैसियत ज़्या है ? सब से बड़ा, सब से श्रेष्ठ र्ध कौन है ? गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं:-

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म॥

सब धर्मों में श्रेष्ट धर्म कौन है ?

हर को नाम जप निर्मिल कर्म॥

हरि के नाम को जपो और सदाचारी नेक पाक बनो। सदाचारी होना ज़्यों ज़रूरी है ? जो इन्द्रियों के भोगों रसों में है, बाहर का जीवन संयम का नहीं तो बाहर से हट भी कैसे सकता है ? Habit (आदत) nature (स्वभाव) बन जाती है।

गुजारे मात्र बरतो इन माहि।

तो कहते हैं :-

अपने जीव की कुछ दया पालो।

चौरासी का गेड़ बचा लो॥

दूसरों पर रहम करते हो, कभी अपने पर भी रहम करो। ज़्या रहम करना है ? चौरासी के आज जाने से छूटना है। अनुभव को पाना है, मनुष्य जीवन मं ही जो आप को भाग्य से मिला है। अब कुछ करो भई आत्म कृपा। अगर प्रभु ने कृपा की भी है माफ करना मनुष्य जीवन ममिला है, अनुभवी पुरुष मिल गया, पूंजी भी मिल गई, आत्म कृपा के सिवाये तुम अन्धे की तरह बहे चले जाते हो। तो हमारे और उसके दरज़्यान अगर कोई रुकावट है तो भई केवल मन की है। एक फकीर ने कहा:-

गर तो दारी दर दिले खुद

अजमे रफ़तन सूये दोस्त।

कि अगर तुम अपने दिल में प्रभु के पाने का पक्का इरादा रखते हो तो ज़्या करो:-

यक कदम बर रफ़से खुद रा,

दीगरे दर कूये दोस्त॥

एक कदम अपने नज़्स ज़्या, मन पर रखो, इस को खड़ा करो, दूसरा कदम जो तुम उठाओगे, वह प्रभु की गली में पहुंच जायेगा। सारे महापुरुषों ने यही कहा। अब मन में लहरें कहां से उठती हैं ? इन्द्रियों की घाट से। जब तक इन्द्रियां दमन न हों काम नहीं बनता। फिर ज़्या करें ? मन की जो आदत बनी है, बार बार भागने की, उस को अन्तर्मुख टिकाओ।

नौ दर ठाके धावत रहाय,

दसवें निज घर वासा पाय॥

नौ दरों से, दो आंखों के, दो नासिका के दो कान, मुंह, गुदा और इन्द्री, इस से सुरत बाहर बही चली जाती है। इस को रोको, बन्द कर लो। इन्द्रियां दमन हो और जो मन की भागने की आदत, उसकी नेचर बनी है उस को अन्तुर्मुख खड़ा करो। अब कहां हो ? नौ दरों में यह दसवां द्वार है (दो भ्रू मध्य आंखों के पीछे) जो पिंड, अड, ब्रह्मंड और पार जाता है। है दरवाजा सब में मगर:-

अन्धे दर की खबर न पाई॥

ऐ अन्धे इन्सान, तुम को उस दर का पता नहीं है जहां से पिंड को छोड़ कर ऊपर जाते हैं। मरते समय वहां आ कर निकलते हो, अब जीते जी आना है। क्राईस्ट ने कहा कि बाहर का मार्ग जो फैलाव का, इन्द्रियों के घाट का है, broad is the way बड़ा खुला रास्ता है, बड़ा

प्यारा मार्ग है, जितने चले जाओ मगर निकलने का कोई रास्ता नहीं। एक और मार्ग है जो अंधेरे से शुरु होता है श्रेय मार्ग। तरीका बयान अपना है बात वही है। बहुत लोगों ने कोशिश की इस के अंतर अन्धेरे का रास्ता जो दसवीं गली हैं न, दउसवां द्वार, उस को पाने की, रास्ता निकलने का उन को मिला नहीं। कई बार-बार ध्यान लगा लगा कर बैठते हैं, गाना गाते रहे, बाहर के साधन करते रहे, वह दरवाज़ा नहीं खुला। अरे भई जो दरवाज़ा खोले उस के पास जाओ। आप खोल सकते हो खोल लो, बड़ी खुशी की बात है। नहीं खोल सको तो सिकी की मदद ले लो भाई, ज़्या हर्ज़ है। लैक्चर, कथा, ज्ञान, बाहरमुखी साणन कोई भी भाई बतला सकता है। इस में कोई फ़जीलत (बड़ाई) खास नहीं पर right understanding (सही नज़री) उसी से मिलेगी जिस को सही नज़री का अनुभव होगा। बाहरमुखी साधनों से फायदा उठा लो, make the best use of them. अपरा विद्याप के साधन, ग्रंथों को पढ़ो, अपने धर्म के। ज़्या, सारे धर्मों की धर्म पुस्ताकें को पढ़ो। आप को यही findings (नतीजे) मिलेगी जो मैं पेश कर रहा हूं। समझे, चीज़ तुम में है मगर रुकावट मन की बन रही है। इसलिये मन को काबू करने का सवाल है।

हमारे हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज थे। उन के पास एक पंडित जी आये। जो बात सुनता है अपील तो हर एक को करती है न उन्होंने उपदेश ले लिया। कहने लगे महाराज, जो आपने बताया है मैं तीन महीने में कर के आऊंगा। हजूर ने कहा भाई बहुत अच्छा इज़ेफाक से मैं वहीं पर था। वह चले गये। तीन महीने छोड़ के छः आठ महीने, बड़ी मुद्दत के बाद आये। दोबरा जब बात हुई फिर भी इज़ेफाक ऐसा था मि मैं वहीं मौजूद था। तो वह कहने लगे महाराज, आगे मैं आठ आठ घंटे भजन करता था, पूजा पाठ। मुझे मन कुछ नहीं कहता था अब पांच मिनट नहीं बैठने देता। पूजा पाठ में तुज़्हारी सुरत को बाहरी खुराक मिल रही है। ज्योति जगा रहे हो, पूजा कर रहे हो, पूजा कर रहे हो, फूल चढ़ा रहे हो। यह कर रहे हो, वह कर हरे हो। खुराक मिल रही है न बुद्धि के विचारों में तफसीरें तुम कर रहे हो। कुछ खुराक मिल रही है। एक बच्चे को अन्धेरी कोठड़ी में बन्द कर दो। ज़्या करेगा? चांखोगा, पुकारेगा, दरवाज़े तोड़ेगा। और याद रखो एक और बात यह मन एक सी आई डी का सिपाही है जो तुज़्हारे साथ लगा पड़ा है। बाबा राम सिंह थे आप को पता हो उन के पास एक personal attendant (निजी सेवादार) था जो सी आई डी का सिपाही था। बड़े भाव में रोज़ सेवा करनी, रोज़ पूजा करनी, यह करना, वह करना। जब रंगून में पहुंचे तो कहने लगा महाराज सत श्री अकाल मैं जाता हूं मेरा काम हो गया। यह मन हमारी आत्मा के साथ सी आई डी का सिपाही लगा पड़ा है। यह तुम को फैलाव में ही रखेगा, अन्तर्मुख नहीं होने देगा। बड़े gentleman के तरीके से, बड़े शरीफ फर्ज़ है उन को पालना। फर्ज़ करते करते दिल दिमाग में वह बच्चे बस गये। बस। भाई निभाओ यह काम बड़ा अच्छा है, करना चाहिए। लोगों की सेवा ठीक है। करो भाई। इतने करो कि अपने आप की होश न रही, न खाने की फरसत न साने की। अरे भई सब चीज़ें अच्छी हैं। charity begins at home यह याद रखो।

अपने आप पर दया करो भाई। अपने आप पर दया कर लोग, हज़ारों पर दया कर सकोगे। लोगों पर दया कर सकोगे। दूसरों को reform (सुधार) करने की बाजय आप reformed हो, एक नमूना बन जाओ। An example is beter than preept प्रचार बहुत हो रहा है हर एक समाज में। कोई कमी नहीं मेरे ज़्याल से। इतना प्रचार कभी भी नहीं हुआ होगा जितना आज कल है। किस बात का? बाहरमुखी

इन्द्रियों के घाट का न। अंतर जाने वाले महात्मा आगे भी कामयाब थे, अब भी कोई नहीं। यह बातें कोई भी नहीं बतलाता माफ करना। बहुत बहुत कम लोग हैं जो इस राज़ (भेद) के वाकिफ़ हैं।

मैं पूना गया गुरुद्वारे में। याद होगा जब सब सैंटर वाले इज़्ज़े हुए वहां पर सत्संग हुआ, तो कहने लगे भई यहां बड़े बड़े लैक्चरार आते हैं, यह बात कोई हमें नहीं बतलाता। मैंने कहा यह गुरबाणी से पेश किया गया। सब महापुरुष यही कहते हैंञ कोई नई चीज़ नहीं यह जो आप के सामने रखी जा रही है। यह पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन है। अरे भाई अपने आप का अनुभव करना है आप ने। जब अपने आप को जानोगे अपने जीवनाधार को जानोगे। तो मन के काबम करने का इलाज ज़्या है। इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, बुद्धि भी स्थिर हो। यह मन के phases (दर्जे़) हैं। इस से हिलोरें उठती हैं। इसलिये महापुरुषों ने कहा कि यह पांच इन्द्रियां ज्ञान इन्द्रियां जो हैं और पांच कर्म इन्द्रियां जो काम कर रही है, देखने की शक्ति आंखों से, सुनने की शक्ति कानों से, सूंघने की शक्ति नाक से, चलने की शक्ति ज़बान से, स्पर्श की शक्ति चमड़े से। यह दस इन्द्रियां हैं। जो इस को कन्ट्रोल न करो आगे काम नहीं चलता है। यहे कैसे कंट्रोल हों ? अर्जुन साहब ने बड़ी खूसूरती से बयान किया है।

गुरु गृह बस कीना,

हों घर की नार।

गुरु ने मुझे यह गृह बस में कर दिया है। यह नौकरानियां हैं, अब मेरे हुज़्म में चल रही हैं। मैं देखते हुए भी न देखूं। आंख खुली रहे। बस। यह गुरु ने कृपा की। हमारी ज़्या हालत है ? कहते हैं, कैसे तू रानी बन गई ?

दस दासी कर दीनी भतार॥

दस दासी कर दीनी भतार॥

दस दासियां, मुझे नौकरानियां दे दीं, पांच कर्म इन्द्रियां और पांच ज्ञान इन्द्रियां। अब यह इन्द्रियां मेरे हुज़्म पर चलती है। और हमारी ज़्या हालत है ? हमें इन्द्रियां खींचे फिरती है, इन्द्रियों को भोग खींचे फिरते हैं। आत्मा मन के अधीन है, यह मैंने अभी अर्ज़ किया था।

आत्मा सत है और मन जड़ है, असत है। अब इस को analyse कैसे कर सकोगे ? पहले इन्द्रियों से हटो न भोगों से इसे हटाओ, फिर मन के इन्द्रजाल से छुड़ाओ, फिर आत्मा को anaylyse कर के, वह सत वस्तु है, सत में लय हो सकती है। मिसाल के तौर पर पानी है। पानी दो गैसों का बनता है, आज़्सीजन और हाईड्रोजन। आज़्सीजन की खासियत है ज़िन्दगी देना। अस्पतालों में अगर कोई मरने लगे न, बहुत ज्यादा बीमार हो तो कहते हैं आज़्सीजन दो भई जल्दी करो। ज़िन्दगी देने वाली चीज़ है और मन गला घोटने वाली चीज़ है। जो हाईड्रोजन है न यह गला घोटने वाली बात है। यह दोनों मिल कर पानी बन जाता है जिस का तासीर आज़्सीजन और हाईड्रोजन से मुखतलिफ (भिन्न) है। अरे भई आत्मा सत है, अजर है, अमर है, समझे। अजर और अमर मगर इस को analyse कर के अनुभव कर लो तो। जब तक मन के अधीन है जीव बना बैठा है, आना जाना बना रहेगा।

तो इस लिये कहां से सिलसिला शुरु हुआ ? इन्द्रियों के घाट से। इन में तीन इन्द्रियां बड़ी प्रबल हैं, एक आंख की, एक कान की, एक ज़बान की। कहते हैं, इन पर बन्द लगाओ। समझे।

चशम बन्दो गोश बन्दो लब बि बन्द।

गर न बीनी सिरें हक बरमन बिखन्द॥

आंखों को बन्द कर लो। कानों को बन्द कर लो, ज़बान को बन्द कर लो, होठों के अंदर ज़बान है। उन को बन्द कर लो, कहते हैं गर न बीनी सिरें हक बरमन बिखन्द अगर तुज़्हें हकीकत का राज़ (भेद) न खुले, कहते हैं मुझे मखैल करना। कितनी definite (पक्की,अटल) चीज़ है। सारे महापुरुषों ने यही कहा है:-

कान आंख मुख बन्द कराओ।

अनहद झींगा शज़्द सुनाओ॥

बाहर से हटो, आगे ही वह अन्तर मौजूद है। आपने पैदा नहीं करना है। आगे ही मौजूद है। It is already there. अन्तर ज्योति का विकास भी हो रहा है और प्रणव की ध्वनि भी हो रही है। अन्तर ज्योति मार्ग ओर श्रुति मार्ग, दो मार्ग है। कहां से शुरु होता है उस का सिलसिला? यहां से, इन्द्रियों के घाट से ऊपर, दो भ्रू मध्य शिव नेत्र कहो, जड़ चेतन का अलेहदा करना कहो, to be born a new कहो, बात समझ आई? यह ष्थ्द्वद्वश्ठ्ठ (सांझी) चीज़ है यह fingինds हैं महापुरुषों की त्रिगुणात्मक अंडे में हम सब कैद हैं।

फूटो अंडा भरम का मन में भयो प्रकाश।

जब तक इस में कैद हो न, कुछ नहीं बनता। मिसाल के तौर पर एक अंडा हो। जो मुर्गी होती है वह उस को सती है। सेने के बाद उस में जीवन बनने लगता है। तो वह कहती है, देख बच्चा बाहर बड़े मैदान हैं, बड़े चोग हैं। तो बच्चा कहता है, माता होंगे, मेरे लिये तो अन्धेरा गुबार है, समझे। वह ज़्या करती है? ठोंग लगाती है। जब बन जाता है है बच्चा तो चोंच मारती है, अन्दर नीचे ठक ठक होती है अंडा टूट जाता है। वह देखता है कि ओहो सूरज चढ़ा पड़ा है। अंडे के टूटने पर पता लगता है, बड़े मैदान, बड़े चोग हैं। अरे भई महापुरुष कहता है तुज़्हारे अन्दर एक दुनिया है नई समझे वह आप को सेता है जैसे मुर्गी सेती है, अपनी गर्मी देता है जो रिसैप्टिव नहीं, जिसका मुंह उधर नहीं वह ज़्या लेगा माफ करना। गर्मी से मुदार है तवज्जो की गर्मी भई। जिस्म-जिस्मानियत का सवाल नहीं। भूल में न जाना। न शिष्य जिस्म है न गुरु जिस्म है। वह कहता है मैं भी जिस्म नहीं तू भी नहीं, छोड़ पिंड और चल ऊपर। और वाकई जब वह बिठाता है, यह (शिष्य) देखता है, ओहो। अन्तर तो एक नई एक बड़ी दुनिया है। जिसमें यह competency (समर्था) है उस का नाम है गुरु। इस की थोड़ी सी पूंजी मिल जाये फिर दिनों दिन बढ़ा लो, काम बन जाये। तो इस लिए हमें जीवन को सात्विक बनाना पड़ेगा। तीन गुणा है, अगर तुम तामसिक में रहोगे या राजसिक में रहोगे तो इन्द्रियों के भोगों रसों की लज्जत में जाओगे और अगर तामसिक रहोगे तो बाहर की आलायशों (विकारों) में फंसोगे। इन को छोड़ो और सात्विक जीवन बनाओ और चढ़ो (ऊपर पिंड से), इसे transcend कर जाओ। इसलिये कहा, ethical life is stepping-stone to spirituality. (नेक पाक जीवन परमार्थ की सीढ़ी है) जब तक यह नहीं बनता, काम नहीं बनता। इसलिये महापुरुषों ने कहा:-

तीन गुणों में सहज ना उपजे

मनमुख भरम भुलायण॥

चौथे पद में सहज है

गुरमुख पल्ले पायन॥

तीन गुणों के पार जाओ तो तुज़्हारी कल्याण

जो जायेगा। समझे जब तक तीन गुणों के पार नहीं जाओ, आप को पता है, गीता में भगवान कृष्ण जी ने अर्जुन की तीनों गुणों के पार चलने का ही उपदेश दिया था, तीनों के पार। हम कहां बैठे हैं ? कभी तामसिक अवस्था में है, कभी राजसिक में हैं, कभी सात्विक भी बीच में ही है। अरे भई सात्विक अवस्था से भी transcend करना है। (इस के पार जाना है)। कई भाई कहते हैं, नेक पाक बन जाओ, इतना ही काफी नहीं है ? अरे भई यह काफी नहीं है। ज़मीन की तैयारी ज़रूर है मगर इस को भी transcend (पार) करना है। आत्मा अनुभव को पाना है। जब तक way up न हो, तब तक काम नहीं बनता है।

तो इस लिये महापुरुष जब मिलता है तो हमें ज़्या तालीम देता है ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। पहले जड़, स्थूल से, फिर सूक्ष्म से, फिर कारणों से। जब यह गिलाफ उतरते हैं अपने आप का अनुभव होने लगता है तो वह देखता है कि मैं आत्मा हूं। फिर अपने जीवनाधार को जानता है। यह practical (करनी का मज़मून) है। तो वह महापुरुष ज़्यों आते हैं दुनिया में ? कौन है जो प्रभु से मिलाता है आप को ? परमात्मा का तो कोई संगी साथी नहीं है न। ज़्यों भई कोई शरीक है उस का ? वह वाहदाऊ लाशरीक है अर्थात उस का कोई संगी साथी नहीं है, कोई भाई बन्धु नहीं, कोई माता पिता नहीं। उस के साथ अगर कोई मिला सकता है तो कौन मिला सकता है ? अब यह सवाल आया। आप ठंडे दिल से विचारिये। यही कहना पड़ेगा कि वह आप किसी इन्सानी पोल में, है तो वह सब में, मगर:-

सज़्बो घट मेरे साइयां,

सुंजी सेज न काये॥

बलिहारी तिस घट के

जां घट परगट होय॥

जिस घट में वह प्रज़्ट हो चुका है, उस के पास हम बैठते हैं, भई हमारे अन्तर है तो सही, हमें भी बाहरी झमेलों से ऊपर ले आओ और उस को प्रज़्ट कर दो। तो उस में मिलाने वाली कौन चीज़ हुई ? वह गाड पावर (प्रभु सज़ा) जो उस में इज़हार कर रही है। तो परमात्मा ही परमात्मा को मिला सकता है और सिकी की हिज़्मत नहीं। गुरु के अन्तर भी कोई मिलाने वाली शक्ति है तो वही खुद आप है। इस लिये सब महापुरुषों ने यह कहा है कि गुरु कौन है ? गुरु नानक साहब से सवाल किया गया, फरमाने लगे:-

सबद गुरु सुरत धुन चेला।

तुज़्हारी सुरत चेला है और शज़्द जो है सब का जीवनाधार है, वह गुरु है। उस के साथ मिलने से सिख सच्चे मायनों में सिख बनता है, समझे। अब जब तक वहां न जाओ, वह तो इन्द्रियों के घाट से ऊपर है मैंने अभी अर्ज़ किया न, analyse कर के (जड़ से चेतन को अलहदा कर के जाओ)।

एवड ऊचा होवे को॥

तिस ऊचे को जाणो सो॥

जब तक वहां न पहुंचो जिस इन्सानी पोल (देह) में वह गति इज़हार कर रही है जो पोल (प्रकाश स्तंभ) बन गया, mouthpiece of Gode बन गया उस के पास बैठो। याद रखो वह गुरु सबका है। उस

गुरु को पाने के लिये पवित्र आंखें चाहिए। इन्द्रियों का घाट छोड़ना पड़ेगा। अरे भई यह इन्सानी पोल पर तो गया गुज़रा डाकू से डाकू भी उन से मिल सकता है। ज़्यों साहब ? यह फज़ीलत (बड़ाई) है। जिस पोल पर इज़हार है उस के पास पापी से पापी भी जा सकता है। उस गुरु को देखने के लिये, उस के पास जाते हैं जिस के अन्तर वह गुरु है। हमू इस लिए उस को भी गुरु कहते हैं और ज़्या कहें ? मतलब असल में यह है कि बाहरी जिस्मानी जिस पोल पर वह इज़हार करता है वह तो हमेशा टूटता है और सब महापुरुषों का टूटा है। जो अन्तर का है वह गुरु है न शज़्द, वह कभी नहीं टूटता। हमारे हजूर फरमाया करते थे जब गुरु नाम देता है तो साथ ही बैठता है और उस वक्त नहीं छोड़ता जब तक इस को सतपुरुष की गोद में न पहुंचा ले। सतपुरुष आगे उस को अनामी obsoute God में लय कर देता है। बात समझ आ गई ? क्राइस्ट ने भी यही कहा। मैं Sest (पश्चिम) गया न वे मुझ से पूछने लगे, when is christ returing ! क्राईस्ट जब वापस आयेगा भई ? मैंने उसने पूछा, ज़्या क्राइस्ट ने तुज़्हें कभी छोड़ा है ? इस शक नहीं वह इन्सानी पोल जिस्मानियत का, वह इन्सानी जिस्म जिस में वह गाड पावर काम कर रही थी वे पोल तो टूट गय सब महापुरुषों के।

राणा राव न को रहे, रंक न तंग फकीर।

बारी आपो आपणी कोई ना बांधे धीर।

न बादशाह रहे, न रैयत (प्रजा) रही, न बड़े आलम फाज़ल, फिलासफर, धनाडय, हाकम। दुनिया मं आये, जिस्म लिया और छोड़ गए। बड़े बड़े अवतार भी आये, भगवान कृष्ण भी आये, भगवान राम भी आये, गुरु नानक साहब, कबीर साहब भी आए। क्राईस्ट ने भी, सब ने जिस्म लिया और छोड़ गये। वह जो पावर थी न, क्राईस्ट पावन या गुरु पावर, वह नहीं मरती। अगर ऐसा पोल इन्सानी जिस पर वह गाड पावन काम करती है वह मिल जाये तो फिर तुम को नहीं छोड़ती उस वक्त जब तक धुरधाम न पहुंच जाओ। इस लिए यह कहा एक गुरु को छोड़ कर दूसरे को मत पकड़ो गुरु गुरु हो। एक बात याद रखो कि गुरु गुरु हो तो गुरु के अन्तर:-

चूंके करदी जाते, मुर्शिद रा कबूल।

हम खुदा दर ज़ाते शामिल हम रसूल॥

जब किसी की जात को तुम ने कबूल कर लिया कि वहां वह समर्थ पुरुष है, उसने आप को कुछ पूंजी दी है, यह इस बात की निशानी है, समर्था की। गुरु वह नहीं जो तुम को लैक्चर, कथा ज्ञान कर देगा। यह तो कोई भाई कर सकता है। बाहर के साधनों में माहिर बना देगा, यह कोई भाई कर सकताहै अगर थोड़ी सी ट्रेनिंग ले ले। असल गुरु उसी का नाम है जो अन्धेरे में प्रकाया करे, जो इन्द्रियों के घाट से तुज़्हें जीते जी wayp up करे जड़ से चेतन अलहदा कर दे, कुछ पूंजी दे, अन्तर की आंख खोले, तुम ज़ुद इकरार करो कि हां कुछ है। थोड़ी पूंजी मिल जाये, चलो आगे यहां भी मदद करे, जब अन्तर जाओ वहां भी मदद दे सके। ऐसी हस्ती का नाम कुछ रख लो।

हमारे हजूर थे। उन से एक बार पूछा गया कि महाराज आप यह बतायें हम आप को ज़्या कहें ? कहने लगे, मुझे भाई समझ लो, बुज़ुर्ग समझ लो, पिता के समान समझ लो, टीचर (उस्ताद) की हैसियत में समझ लो, समझे। मेरे कहे के मुताबिक चलो अंतर, जब वहां पर उसकी शान को देखो, फिर जो चाहो सो कहना। उसकी शान को वहां देखो। Theosophy बोले कहते हैं कि जो master souls (महान आत्माएं) होती है न, उनकी अगे दिव्य मंडलों में मीलों तक रौशनी

जाती है, radiaton होती है। हम को पता नहीं वह एक मल मूत्र का थैला ले कर सामने बैठा है।

दर बशर रूपोश करदन आफताब

शकले इन्सानी में वह सूरज छिपा बैठा है। जिस की आंख खुलती है वह कह उठता है।

हर जियो नाम परयो रामदास।

जिनकी वह आंख नहीं खुली वे कहते हैं, यह कुराहिया है। आंखें खुलने का सवाल है। तो ऐसे पुरुषों की सोहबत में जाकर हमें होश आती है। वह ज़्या कहते हैं ? अरे भाई अपने आप पर कुछ दया करो, चौरासी का गेड़ बचा लो। तो उस हालत को पाने के लिए हमें ज़्या करना होगा ? मोटी बातें वह ज़्या बतलाते थे ? एक हस्ती है परमात्मा उस को अनेकों नाम महापुरुषों ने रखे हैं। हम सब नामों पर कुर्बान हैं। नाम से चल कर हमने नामी को पकड़ना है और यह realisation (अनुभव) कब हो सकती है ? इस का अनुभव करना केवल मनुष्य जीवन में है जो बड़े भाग्य से मिला है और हम इस को भोग भाड़े में गुज़ार रहे हैं। जिस को पूछो, ज़्यों कुछ करते हों ? वक्त नहीं है जी वक्त गुज़रा जा रहा है। किसी को दस साल, किसी को बीस साल, किसी को पचास साल हो गये। बताओ अब तक ज़्या किया है। इसी में (मनुष्य जीवन में) तुम कर सकते हो। एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथों से निकल गई तो यह जन्म तो बरबाद हो गया। समझे।

तो पहली बात, एक ज़ाते हक (अविनाशी प्रभु) है। उस के हम सब कतरे हैं कह दो। समझने की बात है, finite temrs (सीमित परिभाषा) में उसको समझने के लिये। मतलब यह कि वह महा चेतन्यता का समुद्र है। हम भी महाचेतन की लहरों के कतरे हैं। समुद्र एक है। जब finite (सीमित) हद से, इन बंधनों से आज़ाद, liberate हो गये तुम देखेगे कि वह मुझ में है और मैं उस में हूं। समझे। क्राईस्ट से पूछा गया कि ज़्या अच्छा हो कि तुम कभी अपने पिता के हम को दर्शन करा देते ? कहते हैं, he grew indignhant over it, वह ज़रा जोश में आये। कहने लगे, अफसोस मैँ इतनी मुद्दत तुज़्हारे दरमियान रहा और तुम यह न जान सके कि मुझ में मेरा पिता ही बैठ कर काम कर रहा है। समझे, कहते हैं, हम देख कर कहते हैं। लोग यकीन नहीं करते हैं। अरे भई कैसे करें ? जब उस लैवल पर आयें तब हो न गुरु का विश्वास भी उस वक्त आयेगा जब अन्तर्मुख गुरु की guidance (गाइडैंस) को देखोगे। बाहर उस को कम से कम एक श्रेष्ठ पुरुष तो समझो न। बड़ा भाई समझ लो, वह तुज़्हारी आत्मा का साथी है, उस के अन्तर तुज़्हारा दर्द है, उस के अन्तर प्रभु बैठा बोल रहा है। हम सब उस की अंश हैं। वह इस नज़र से सब को देखता है कि सब आत्मा देवधारी है, बड़े दुखी है वे समाजां के लेवलों की नज़र से नहीं देखते।

सत्गुर ऐसा जाणिए

जो सबसे लये मिलाय जियो॥

जो सब को मिला कर बैठता है। समझे मेरी बात ? एक पिता को, हर एक पिता को बच्चे का फिक्र होता है कि नहीं ? वह भागे दौड़े फिरते हैं।

क्राईस्ट से पूछा भई तुम ज़्यों आगे पीछे दौड़े फिरते हो ? कहने लगे, I have yet many sheep to look after. बड़ी भेड़ें गुम हो गई हैं। मैं उन को तलाश कर रहा हूं, ढूंढ रहा हूं। एक दफा हजूर थे। गर्मी का मौसम था। ज़्यास में थे जून-जुलाई का वक्त आ गया, बड़ी सज़्त गर्मी।

तो किसी ने कहा महाराज आप की डलहौजी पहाड़ पर कोठी है, वहां ज़्यों नहीं चले जाते हैं ? मैं था खड़ा। तो फरमाने लगे, लोग जानते हैं मैं वहां ठंडी हवायें लेने जाता हूं। मैं तो इस लिये जाता हूं कि आम लोग, आम अमीर तबका, ये वहां जाते हें कईयों को प्रभु की ज़्वाहिश होती है, उनका काम हो जाये। यह लफ़्ज़ थे। मैं कोई पहाड़ों पर ठंडी हवायें लेने जाता हूं ? न भई, तो मारे मारे, कभी यहां, कभी कहां, कभी कहां कभी कहां फिरते हैं। वे ढूंढते हं जो पिछले संस्कारी जीव हैं। वे सफाई करते रहते हें। बच्चे गुम हो गये, कहां गये। मेरी भेड़ें गुम हो गई है। वे इस नज़र से दुनिया को देखते हैं। जैसे पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो न इन्सान, वह चारों तरफ देखता है, कहां धुआं आ रहा है, कहां आग जल रही है। वह देख सकता है न। या आप वहां लेकर पानी पहुंचता है या उनकी किसी न किसी तरह जिन के अन्तर तड़प हो, किसी न किसी हीले वसीले से अपने पास बुलता है। यहां समाजों का कोई सवाल नहीं। जिस इन्सारी हृदय में उस के पाने की तड़प है किसी समाज, किसी मुल्क, किसी कौम में भी है, उन की नज़र उन पर है। आप पहुंचता है या उन को अपने तक पहुंचने का समान करता है। कई दफा अन्तर ज़्वाबों में आ कर कहा, वहां जाओ भई, मैं वहां आ रहा हूं, तुम वहां आ जाओ। मुझे याद है, हजूर की हर जिन्दगी का वाकेया है। अब भी होता है यह पावर तो वही काम करती है न। अमृतसर का वाकेया है। सुबह का वक्त था। हतूर वहां पर, एक हकीम थे, वहां के, उन के मकान पर आकर ठहरे थे। मैं भी वहां था। इतने में एक भाई आया वहां। मैंने कहा सुनाओं भाई साहब कैसा आना हुआ ? कहते हैं, रात को यह गये थे, कहने लगे मैं फलाने मकान में ठहरा हूं। कहते हैं, रात को तुम वहां आ जाना। मैंने कहा, आगे आप ने दर्शन किये ? कहता है, नहीं। मुझे पता दिया है, इस मकान में आ गया। कहां है महात्मा ? मैंने कहो यही हैं। चलिए अन्तर में बैठिए, अभी आयेंगे। तो बात समझे ? वह गाड पावर है। वह पहाड़ की चोटी पर बैठती देखती है कहां कोई बैठा है। उसकी तड़प वहां चपहुंचेगी या उसको वहां लायगी। तो हामरे हाथ में कौन सी बात है ऐसी हस्तियों को पाने के लिए ? अन्धा आंखा वाले को नहीं पकड़ सकता ज़्यों साहब, आंख वाला दया करे तो अन्धे का हाथ पकड़ ले तो पकड़ ले। जो मन इन्द्रियों के घाट पर फैलाव में बैठे हैं, अन्तर से अन्धे हैं। वह ज़्या यह काम कर सकते हैं। हम को महात्मा भी चोर नज़र आता है, कुराहिया नज़र आता है। पढ़े लिखे आलम फाज़ल उनकी मुखालिफत (विरोध) करते हैं। गुरु नानक साहब, कबीर साहब वगैरा आए कौन मुखालिफत करते रहे ? पढ़े लिखे आलम फाज़ल (विद्वान) ही करते रहे, जो इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, ज़्वाहे आलम हैं या फाज़ल हैं, वह हकीकत शनास लोगों, अनुभवी पुरुषों को नहीं पहचान सकते हैं। हां वह दया करे, आप हाथ दे कर पकड़ ले तो पकड़ ले। स्वामी जी से सवाल किया गया भई अब ज़्यण करें ? गुरु की मौज पर है। कहने लगे कि हां, मेरे दिल में, चित में एक बात समाई है। गौर से सुनिए। जहां तुम सुन पाओ, जाओ वहां देखो वहां ज़्या होता है ? जाना हमारा है फिर नम्रता भाव हो। जहां पर याद रखो, humility (नम्रता) नहीं, वहां कुछ नहीं बन सकता है। प्रभु को पाने के लिए, सेंट आगस्टन से पूछा गया कि भाई हमें ज़्या करना चाहिए ? कहने लगे First humility, second humility, पहले नम्रता हो, तभी तुम किसी महात्मा के पास जाओ। अगर नम्रता न हो तो तुम उस के पास जा ही कैसे सकते हो ? तो पहली बात है नम्रता। इस लिए जिनके अन्तर नम्रता नहीं किसी पास जाता ही नहीं। झगड़ा पाक आलिम फाज़िल धनाडय, हाकिम, ज्यदातर खाली रह जाते हैं। किसी के पास चले भी गये, वहां, हां यह जानता

है, मैं भी यह जानता हूं। वह कहता है यह करो, वह कहता है मैं भी तो पढ़ा लिखा है, मैं भी जानता हूं। फलानी जगह यह लिखा है, यह फलाना है, उसकी बुद्धि की कसौटी पर परखता जाता है, और फेंकता चला जाता है। जो कहीं जायें भी, अरे भई जो कुछ तुम जानते हो वह तो जानते ही हो न, वह तुज़्हारा कोई छीन नहीं लेगा। सुनो वह ज़्या कहता है ? शायद वह कोई और बात भी कहता हो। अगर आप उस रास्ते जा रे हो तो आप की conformation (समर्थन) हो जायेगी, तसदीक हो जायेगी कि वहां वाकेई ठीक है। शायद वह नई बात भी कुछ कहता हो। जो प्याला सुराही के नीचे है, वही भरा जायेगा न। जो सुराही के ऊपर होगा वह कैसे भरा जायेगा ? तो वहां भी जा कर attentively (ध्यान से) सुनो वह ज़्या कहता है ? अगर तुम जानते हो तो अच्छी बात, तसदीक हो गई। नहीं जानते हो शायद उसकी तालीम वही है जो मैंने पहले अर्ज़ की, पराविद्या की तालीम। समझे।

किन बिध मिले गुसाई मेरे राम राय।

कौन सी विधि है, जिससे वह पृथ्वी का मालिक हमें मिल सकता है ? कहते हैं, कोई, कौन ? कोई यह सवाल नहीं कि कौन हो।

कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता।

मोहि मारग दे बताई॥

जो त्रिगुणातीत अवस्ता को पा चुका हो हमें उसकी अवस्था देने में मददगार हो, ऐसा संत जो हो, वह रास्ते पर डाल दे, इन्द्रियों के घाट से पहले दिन ही ऊपर ले आये, फिर सहायता कर सके। वह ज़्या तालीम (शिक्षा) देता है। वह कहता है, वह परमात्ज़ तुज़्हारे अन्तर में है मगर अलख है, वह परमात्मा तुज़्हारे अन्तर में है मगर अलख है। न लखिये जाई अगर तुम इन्द्रियों का घाट छोड़ो तब लख जायगा। बिच हौंमे परदा पाई। बीच रुकावट देह ध्यास की, हौमें (अहंकार) की लगी पड़ी है, स्थूल की, सूक्ष्म की, कारण की। तीनों के पार चलो, हकीकत मिल जायेगी। वह ज़्या कहता है ? कहां पर है वह परमात्मा ? कहते हैं:-

एका संगत इकत ग्रह बसते,

मिल बात न करते भाई॥

एक ही संबत में, एक ही घर में, दो भाई, आत्मा और परमात्मा रह रहे हैं मगर एक दूसरे को जान नहीं रहे, अफसोस। कहां ढूंढते हैं ? ग्रंथों पोथियों में। अरे भाई ग्रंथों पोथियों की कीमत है हीरे जवाहेरात से ज्यादा कीमत है। उन findings (अनुभव) दी है जो अनुभवी पुरुषों ने पाये हैं। पढ़ने से उसका शौक बनता है, हम भी पायें। शौक के दिलाने के लिए महापुरुषों के ज़ाती (निज के) ezpreicne (अनुभव) पढ़ कर, Parallel study of religiojns (धर्म ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन करने) से, महापुरुषों के कलामों को निश्पक्ष रूप से खोजने से पता लगता है कि एक जाते हक (अविनाशी प्रभु) है। लोगों ने पाया है, हम भी पा सकते हैं। कहां पर ? यह बातें आज मैं पेश कर रहा था आप के सामने। तुज़्हारे अंतर में है। और हम ज़्यों नहीं पा सकते ? यह देह-ध्यास (देह का आभास) बना पड़ा है और ज़्या। तो थोड़े लज़्ज़ों में यह है महापुरुषों की तालीम, किसी महापुरुष की बाणी लो यही बातें कहेंगे।

Zoraster (ज़रतुस्त) से पूछा गया कि महाराज आप जो आये हो, हमें ज़्या तालीम देते हो ? कहते हैं भई मैंने कोई तालीम नहीं देनी है। यही देनी है कि join the army of God, प्रभु की फौज में दाखल जो

जाओ। बस यह नहीं कहा कि समाजों को फौजों में दाखल हो जाओ समाजों के वे लेबल लगाये बैठे हैं। Badgaes होते हैं न स्कूलों में कालेजों के अपने अपने किस गर्ज़ के लिये ? प्रभु को पाने के लिये और प्रभु का पाना किस को होगा ? आत्मा को। जब तक तुम अपने आप को नहीं जानते प्रभु को पहचान नहीं सकते। इसलिय सब से पहली चीज़ यह है कि self knowlege precedws God knowlege, अर्थात पहले अपने आप को जानो, analyse करो, जड़ से चेतन को अलहदा करो। तुम आत्मा देहधारी हो, मन इन्द्रियों के घाट पर घिरे पड़े हो। इस से liberate (आज़ाद) करो आत्मा को, analyse करा, trise above करो (पिंड से ऊपर आओ)। अपने आप को जानो, फिर तुम जीवनाधार को जान सकोगे। सूझे Jon the army of God. सिकी समाज में रहना एक बरकत है। यह स्कूल और कालेज हैं। नहीं रहोगे तो corruption हो जायेगी। समझे मगर रह कर, जिस गर्ज़ के लिये दाखिल हुए हो उस को न पाओ तो जन्म व्यर्थ चला जायेगा। जैसे अब है न, वैसा ही चला जायेगा। या नई समाजें खड़ी करनी पड़ेंगी। अरे भई आगे ही थोड़े कुएं लगे पड़े हैं। और कुआ लगने कील ज़्या ज़रूरत है ? समाजों के बदलने की ज़रूरत नहीं, लेबल बदलने की जरूरत नहीं, बोले बदलने की ज़रूरत नहीं। रहो किसी समाज में हर एक समाज में महापुरुष आये हैं और यही तालीम देते रहे जो मैंने अभी आप को पेश की है, थोड़े से लफ़्ज़ों में findings वही हैं।

तो ज़रूरत किस बात की है ? जो इस रास्ते चला है अन्तर जाने वाला महात्मा, उस को साथ ले लो। तुम को way up कर (पिंड से ऊपर लाए) थोड़ी सी पूंजी दे दे और साथ सहायता भी कर सके। बस और ज़्या है ? तो अनुभवी पुरुष के पास बैठना, ज़्वाहे किसी समाज में रहो, एक बड़ी भारी बरकत है। जरूर रहो। नहीं तो दुनिया में corruption (गिरावट) हो जायेगी मगर रह कर, जिस गर्ज़ के लिये दाखल हुए हो उस को न पाओ तो ? हम ज़्या करते हैं ?

चाले थे हरी मिलन की

बीच ही अटकयो चीत।

चले तो थे प्रभु को पाने को, बीच ही में अटक गये, प्रभु के पुजारी बनना था, समाजों के पुजारी बन गये। समझे। समाजों में रहो ठीक। किसी समाज में पैदा होना एक बरकत है। न रहोगे तो corruption हो जायेगी मगर किसी समाज में पैदा हो कर जिस गर्ज़ के लिये दाखल हुए, वह न पाओ तो जीवन बरबाद चला जाता है।

आशकां रा मज़हबो मिल्लत जुदा अस्त।

प्रभु भक्तों की एक नई समाज है। उस में दाखल होना है। प्रभु की फौज में तो पूछा कि हम ज़्या करे ? हमारा चलन ज़्या हो ? तो बताया, righteousness (सदाचार) किस को कहते हैं ? Good thoughs, good words and good deeds. शुभ भावनायें, शुभ वचन और शुभ रहनी। बस। वही कल जो उपदेश दिया।

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म॥

हरि को नाम जप निर्मल कर्म॥

यह अनुभवी पुरुषों का नज़रिया (दृष्टिकोण है। उन का लैवल कहां से है ? वे आत्मा के लैवल से देखते हैं। इस लिए कहा है:-

सतगुर ऐसा जाणिए,

जो सब से लये मिलाए जियो॥

उस को कहते हैं जगत गुरु समाजिक गुरु भी अगर सही प्रचार करें तो सब का प्यार हो जाये, है तो सब उसी एक के पुजारी कि नहीं ?

सैकडों आशिक हैं दिलराम सब का एक है।

मज़हबो मिललत जुदा हैं, काम सब का एक है॥

किसी समाज में रहो, समझे, गर्ज़ वही है, उस के पानी की।

रज़ब निशाना एक है तीरअन्दाज़ अनेक।

जिस समाज में रह कर आप ने उस को पा लिया, आप का जीवन सफल हो गया। और हर एक समाज में, जिन्होंने उस को पाया है, उन के नाम रौशन है आज दिन तक गुरु नानक साहब आये उन के माता पिता का नाम सिवाय चन्द सिख भाईयों के और कोई नहीं जानता है। कबीर साहब के माता पिता का नाम तारीख (इतिहास) नहीं बतलाती। क्राईस्ट का पिता कौन थ, कोई पता नहीं। बड़े बड़े ऋषि मुनि, महात्मा आये, उन के माता पिता का नाम कौन जानता है ? उनके नाम इअभी तक दुनिया में रौशन हैं। तो किन के नाम रौशन है ? जिन्होंने प्रभु की तरफ कदम रखे, उस को प्रज़्ट किया। जहां वे बैठे, तीर्थ स्थान बन गया। समझे, दस जगह बैठे दस तीर्थ स्थान बन गये। बड़ा कौन हुआ ज़ई ? वह चलता फिरता जंगम तीर्थ है। चलता फिरता तीर्थ हैज जहां वे बैठ गये वही तीर्थ है। तो कल मैंने आप को पेश किया था। कि सत जीवन, तीर्थों पर जाना, यह वह, उन की गर्ज़ ज़्या थी ?

तीर्थ बड़ो कि हर का दास।

यही कहना पड़ेगा कि भई हरि का दास बड़ा है। जिस के सबब से तीर्थ बने, उसके लिये हमारे दिल में इज्जत है। तो जहां जहां महापुरुष रहे, वहां तीर्थ स्थान बन गये। जब तक चलता फिरता कोइ God on earth जिसने अनुभव को पाया है, नहीं मिलता, हम को वह चीज़ नहीं मिल सकती। आलिम आप को इल्मियत देंगे। त्रशस्त्रद्धशशस्त्रद्य वाले ही आप को त्रशस्त्रद्धशशस्त्र देंगे। बस। मगर इस सारी बात का बिना (आधार) कहां से शुरु होगा ? स्वामी रमतीर्थ ने कहा, Wanted reforemrs, not of others but of themselves. हमें सुधारकों की ज़रूरत है किन की ? दूसरों को नहीं, अपने आप को feformer (सुधार करने) के लिये। हम दूसरें को reform करनते हैं। अपने आप को नहीं करते। नतीजा यह कि reform कोई नहीं होती है। जितने भाई बहनें आप बैठें हो, अगर आज से ही अपने आप को reform करो जैसे कल मेंने जिक्र किया थ, आप के touch (सज़्पर्क) में जिनते घराने वाले होंगे सब बदल जोयंगे। जो आप को टच में है वे बदल जायेंगे। मैं आप को बेहतर कह रहा हूं। मुझे कह रहे हो।

पहले मन परबोधो अपना,

पाछे अवर रिझाओ।

फिर दूसरों को कहो। अगर एक चीज़ तुम की मिली है, ठीक। कहो मिली है। नहीं मिली तो कह दो, नहीं मिली है।

मै ऋषिकेश में रहा। उन्नीस सौ अड़तालीस की बात है। सब महात्ज़ओं से वहां पर मिला मैं। सब से सवाल किया। दो बातें मैंने जिक्र कीं, कि महारज पहली बात, कि सुरत योग और ज्ञान योग में ज़्या फर्क है ? समझे। दूसरे कि साव्त्रि के जीवन में आता है कि वह जिस्म को छोड़ कर अपने पति के पीछे गई और वह उस को वापस ले बाई। जिस्म को छोड़ कर गई फिर वापस आ गई। यह ज़्या साईंस है ? किसी ने जवाब नहीं दिया। दूसरे, जीते जी जिस्म को छोड़ कर कैसे गई ? यह अफसाना है या सचमुच है ? अरे भई जीते जी पिंड को छोड़ कर जाना,

वापस आना, एक रेगूलर साईंस है। अब भी हो सकती है। जब भी कोई महापुरुष मिले, हो सकती है। दूसरा, सुरत योग बड़ा है ज्ञान योग बड़ा है ? तो कहने लगे सब से एक आलिम फ़ाज़िल थे, कहने लगे, ज्ञानयोग एम0ए0 कलास है और सुरत योग मैट्रिक कलास है। मैं चुपचाप चला आया। अरे भई सुरत के आधार पर तो ज्ञान काम करता है, बुद्धि काम करती है। वह तो एम0 ए0 और यह सुरत योग दसवीं कलास ? तो एक पुरुष मुझे मिला सिर्फ जो सचमुच जड़ चेतन को अलहदा करते थे। आलिमों का यह काम नहीं यह याद रखो, मैं फिर अर्ज़ करूं तो वह पंतजलि योग करके पिंड को छोड़ कर सहस्त्रार में जाता था। एक मिला मुझे वह अब भी जिन्दा है। कभी कभी आया करते हैं। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब कभी आया करते हैं। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब ज़्या है भई कि अनुभवी पुरुष की सोहबत अज़्तियार करो। घर के झंझटों को इस को भी सैट कर लो। यह नहीं कि काम नहीं करना। चौबीस घंटे हैं।

काम अपना करो जाई पराए काज ज़्यों फंसना।

कुछ अपना काम भी करो भई। अपना काम यही है कि अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद करो, प्रभु से जुड़ो, उस आनंद को पाओ जिस को पाकर दुनिया के आनंद भूल जायें। बस। मर कर कहां जाओगे ? वहां की आशा होगी, जहां का रस मला हो। जब महारस को पा जाओगे जीवन का कल्याण हो जायेगा। बात को यही है। तो मेरे अर्ज़ करने का इस वक्त मतलब है कि मनुष्य जीवन भाग्य से मिला है इस से फायदा उठाओ। किसी भी समाज में तुम रहो, हर कर गुरसिख बनो समझे।

दसम गुरु साहब ने पूछा गया कि महाराज आप सिख की तारीफ कर दो। तो फरमाने लगे बहुत अच्छा किया जो यह सवाल पूछा। कहते हैं, मेरी नज़र में तो सारा जहान ही सिख है। लोगों ने पूछा, महाराज वह कैसे ? कि बच्चा पैदा होने से मरनपे तक कुछ न कुछ हर रोज़ नई शिक्षा धारण करता है। जो शिक्षा को धारण करे, उसका नाम है सिख। हां हमें, सब को, गुरु-सिख बनना चाहिए। किसी जागते पुरुष के पास बैठो, वह तुम को जगा दे। और केवल मनुष्य जीवन ही में तुम यह काम कर सकते हो। तो मैंने आप के सामने findings रखीं।

हमारे हजूर की हस्ती थी जिन्होंने findings की ताईद की (समर्थन किया)। Living example (जिन्दा मिसाल) वह हमें मिले। यही बातें बड़े प्यार से पेश करते थे, बड़ी सादा बोली में, रोज़ाना की बोली में। उनके सत्संग में लोग आते थे। एम0 ए0 पास एम0 ए0 की लज़्त ले जाते थे, अनपढ़ अनपढों में रह कर उसी आनंद को ले जाते थे। यह बड़ाई थी। एक दाफ मैंने हजूर से अर्ज़ किया शुरु शुरु में जब मैं गया कि महाराज आप जिस खूबसूरती से थोड़े लज़्ज़ों में बयान कर देते हो, मैं आधा घंटा लगाऊं, नहीं बयान कर सकता। ज़्यांकि साहब अइब भी पेश कर रहे हैं। जो अनुभवी पुरुष हैं, एक खास सुंदरता है उसके तरजे बयान में, ज़्योंकि वह देख कर बयान करता है, बयान करता चला जाता है as its comes, जैसे रौ आती है। यह शुरु-शुरु की बात है जब मैं हजूर से मिला था। रश्क (वैसा बनने का भाव) होना अच्छा है भई। हसद (ईर्षा) नहीं होना चाहिए। समझे। एक आदमी देखता है। भजन कर रहा है। तुम भी भजन करो। तो यह तो अच्छा है। वह भजन ज़्यों करता है ? अरे भई यह तो अच्छा है, तुम भी करो। यह कहना कि वह ज़्यों करता है, तुम भी करो। यह कहना कि वह ज़्यों करता है, वह ज़्यों बढ़ा, मैं ज़्यों नहीं, भई तुम भी बढ़ जाओ। तो थोड़े लज़्ज़ों में मैंने पेश

किया कि महात्माओं की findings ज़्या होती है। जब जब वह आये जिस समाज में आये यही बात पेश की है। अरे भई ये चीज़ें आप को अनुभव करनी है मनुष्य जीवन में ही। अरे भई उस के लिए आप ने ज़्या किया है ? देखनी बात फिर वही है। आप को मनुष्य जीवन भाग्य से मिला है। प्रभु कृपा से आप किसी न किसी महापुरुष के चरणों में पहुंच गये हो, जिस ने यह जिन्दगी का राज़ (जीवन का भेद) हल किया है। अब आपत्म कृपा चाहिए। एक ही जन्म में तुज़्हारा फैसला हो सकता है।

कहो नानक जा का सत्गुर मिलया,

तिन का लेचाा निबड़ेया॥

मिलेया की निशानी ज़्या है ?

सतगुर मिला तब जाणिये,

जो मिटें मोह तन ताप॥

जिस्म-जिस्मानियत से ऊपर आ जाओ, बाहर की चीज़ें effect (असर) न करें तब समझो मिला है। अनतर में contact (संपर्क) जाए, इसका नाम है मिलना। शकलें तो माफ करना, गुरु नानक साहब और महापुरुष आते हैं उनकी जो मुखालफत की, उसको देखें तो दर्शन तो सब ने किए।

सत्गुर नूं वेखदा जेता को संसार।

समझे मेरी बात ? सत्गुर को सारा संसार देखता है मगर जब तक, सबद न धरे प्यार जो God power (प्रभु सज़ा) जो उस में काम कर रही है, जब तक उसका अनुभव नहीं होता हनोज दिल्ली दूर अस्त। यह बात हजूर के चरणों में बड़ी स्पष्ट होती थी। मेरे दिल में सब महापुरुषों की इज़्ज़त है। सब से पहले उस प्रभु की जो मुखतलिफ जामों में आकर दुनिया को हिदायत करते रहे, अब भी कर रहे हैं द्ध हमें जिस हस्ती से यह फैज़ मिला, वह हजूर (श्री बाबा सावन सिंह जी महाराज) जिनके चरणों से बैठे कर यह बातें समझ आईं। भई मैं अपना नहीं पेश कर रहा, जो मुझे हजूर के चरणों में समझ आई, parallel study of religion (धर्म ग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन) से practically (अनुभव रूप में) या theoretically (सिद्धान्त रूप में) बड़ी clearcdut (स्पष्ट और साफ) चीज़ समझे। यह common (सांझी) चीज़ है। World Religious Conference (विश्व धर्म सज़्मेलन का जल्सा सन् क-भ्त्र ई में जो हुआ और अब क-म्-में भी फिर दोबारा मुझे प्रधान ज़्यों चुना ? उन को यह बातें पसंद आईं। मुझे कोई देता है credit (श्रेय) मैंने वहां पर अपनी presidential speech (प्रधान पद के भाषण) में यही कहा था All credit goes to huzoor, नाम दिया उनका बाबा सावन सिंह जी महाराज को श्रेय है उसका। लड़का लायक हो जाये तो उस्ताद को श्रेय है न भई कि नहीं। अगर खज़ांची को कोई मालिक देने को जैसा दे उस को, देता जाये, उस का उस में ज़्या उस का श्रेय है ? उस को है, शाह (मालिक) को है न। तो अरे भई सिख ने किसी चीज़ को पाया है तो भी वह उस की (गुरु की) कृपा है। यह उन की दया से है। यह तो यहां पर आप सब को फैज़ (लाभ) मिल रहा है। यह common ground (सांझी धरती) है सबके लिये उन की हिदायत से कि ऐसी common ground पैदा करो जिस पर सब समाजों के भाई इकट्ठे हों। अपनी अपने बोले रखें, अपने अपने लेबल (चिन्ह चक्र) लगाये रखो, अपराविद्या से फायदा उठाओ। इन्द्रियों के घाट से ऊपर चलो। वह प्रभु जिस को तुम ने पाना है, वह तुज़्हारे अन्तर में है। उन की बखिशश से

लोगों को यह चीज़ मिल रही है। यहां पर मैंने कोई मन्दिर नहीं बनया है। कई ज़ाई पूछते हैं कि कौन सा मन्दिर बनाया है। मैंने कहा, नीचे ज़मीन ऊपर आसामन सारा जगत ही हरि मन्दिर है भई। यहां शैड जरूर बना रखा है, आये गये को बारिश और धूप से बचत हो जाये। मगर देखो जिस महापुरुष की दयाहै, हजूर का नाम था सावन हमेशा घटा छाई रहती है अब भी है। उन की संभाल की निशानी है। तो मैं अर्ज़ कर रहा था, यहां किसी समाज के चिन्ह चक्र न रखने का कारण यह नहीं कि मैं समाजों के हक में नहीं। भई सब समाजें अच्छी हैं। सब समाजों में महापुरुष आये हैं। जिस समाज में हो, महापुरुषों की शिक्षा का सार तत्व यही है, findings जो मैंने आप के सामने रखीं। उन के कलामें पढ़ो, तुम को यही कुछ मिलेगा। ज़रूरत किस बात ही है, कि मनुष्य जीवन में ही तुम पा सकते हो।

*****